182.Gb.907.1 সঙ্গীত-মঞ্জরী।

-0000-

নারাজোনাদিপতির—সঙ্গীতাচার্য্য শ্রীরামপ্রসন্ধ বন্দ্যোপাধ্যায় কর্তৃক প্রণীত।

মেদিনীপুর ও নারাজোলাবিপতি শ্রীযুক্ত রাজা নরেন্দ্রলাল থান মহোদয়ের যন্ত উৎসাহ ও আন্তক্তন্য প্রচারিত।

কলিকাতা

ং শং বাষ্বাগান স্থীট, ভারত্যিহির যন্ত্রে,

গান্তাল এও কোম্পানি স্বারা

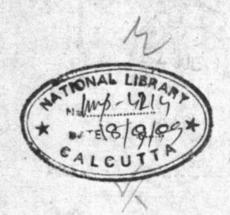
মৃজিত।

১০১৪, বৈশাধা

मूना भीड है। को।

Rot Franciscon

12 487.



Settor.

Baja Uarendea Pall Khan Lahadoor

OF MIDNAPUR-NARAJOLE.

WHOSE PIETY AND DEVOTION, WHOSE LOVE OF MUSIC

ÄND

EXQUISITE TASTE FOR FINE ARTS

AND

THOROUGH APPRECIATION OF THEM ..

ARE

SO WIDELY KNOWN,

THIS TREATISE ON MUSIC

IS

RESPECTFULLY DEDICATED

AS A TOKEN

OF

GRATITUDE

BY

THE AUTHOR.



রাজা নরেন্দ্রলাল খান বাহাতুর।

''ত্রিবর্গকলদাঃ সর্বের দানাধীতিজপাদয়ঃ। একং সঙ্গীতবিজ্ঞানং চতুর্ব্বর্গকলপ্রাদম্॥'' ''জপকোটিগুণং ধ্যানং ধ্যানকোটিগুণো লয়ঃ। লয়কোটিগুণং গানং গানাৎ পরতরং নহি॥''

''দঙ্গীতদাহিত্যরদানতিজঃ খ্যাতঃ পশুঃ পুচ্ছবিষাণহীনঃ। জীবত্যদৌ যতু তৃণং ন খাদংস্তদ্বাগধেয়ং প্রমং পশুনাম্॥''

"The man that hath no music in himself,
Nor is (not) moved with concord of sweet sounds,
Is fit for treasons, stratagems and spoils;
The motions of his spirit are dull as night,
And his affections dark as Erebus:
Let no such man be trusted."

Shakespeare.



বাহার, তেওরা।

ভো নরধন অ্থীজেজনগণ মেলিমণি মলোমোহন,
কর সকল অধীজন পালন হর স্ব্যান্ত মনোতৃংখ ভার হে।
বঅধা ভরিয়া তব যশ-শশধর বিধারে জ্যোতি অন্দর,
হে নরবর নরেজলাল নাম অপরচার হে।
তুমি সকল-তৃঃখ-ভন্জন অজন-রন্ধন-খন নাবাজোলরাজকুল সমুজ্জল রবি বিবিধ গুণাধার হে।
ধর ভূপ-প্রবর ধর সাদর তব করে স্মর্পিত
সঙ্গীতস্তরজ্জন-স্কলর মঞ্জ-নধর-মঞ্জরী-উপহার হে॥

জীরামপ্রসন্ম দেবশর্মা।

আহায়ী।

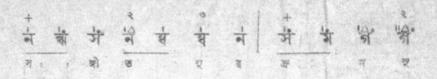
অন্তরা।

দঞ্চারী।

আভোগ।

前前前部部部部部部部

为为为前期新疆特别





ভ্রম সংশোধন।

	MA A			ni fer			
नृश् ।	পংক্তি।	অঙ্গ।	421	पृष्ठी ।	পংক্তি।		961
>9	>	বৃংহতি	বৃহিত	200	,	বাণী	ৰনি °
55	. 6	সরিৎ	স্বব্যিত-			16	1
53	24	রাগরাগিণী	রাগরাগিণীর	266		্বি বি	fs f
29	53	ম্ধামাশ্চার্থ	ম্ধামাশ্চাপ	249	6	বেতে	এতে
3.0	২০ ব্য	গতর্গাত্রক্য	বাঞ্জনস্বর্দ্ধ-				
			মতিক্য	526	•	ক্ৰিৱে	করিয়ে
₹6		অব্যর	আবার	252	3	ভরম	ভগম
-06	22	ভানপুরা	ভাৰুৱা	500	e	ভণখণ	ভূমীগ্ৰ
		गश्कील	গঙ্গাত গঙ্গীত	186	0	পরায়ণ	ভয়াখুপ
82	٩				1	॥ 1 । श्रु म श्रु	सा । मा ६
65	9	া স	16 म	260	8 1	4	गृश्यान
b2 1	হটতে	স্থ্যসাধ্য	ঞ্চাদ				च था
	পর্যান্ত						1 4
							<u>थ</u> न ह
60	٥.	»। ম	4				
200	8	मिटन	पिन	रेम्द	¢	य श	। । । य श्रम
2208	हेंद्र मन	বায়ী, ভোড়ী,	দরবারীভোড়ী			ৰে	a
	পর্যান্ত,	1		400	*	মি	CR
		11△*	ıιΔ		2	থিনতট	ক্ষীপকট
258	4	ষ	4			1- 1- 10	
: 202	8	ग,वांद	নৰল	988	3	भ वा न	म च ग
205	0	আধারক	অদারক			¥.	মু জি
		The La	te lie te	005	Ø	পদ্ৰার	পরবর
	6	म म	म म म	804	0	ভয়ো	ভূম
		ৰা ল	२ हो न		8	निगक दछ।	ল দীনকরতার
>48	8	X × X × I	X + X (a) 1			щ	
		a	T 8	822	8	न च	স
7 6 6							4
	SAN BURNEY VENUE	The second second second	THE RESERVE OF THE PARTY OF THE	WATER TO SERVICE AND SERVICE A	State State State St.		THE PERSON NAMED IN COLUMN 2 IS NOT THE OWNER.

20 25 30				1202000	LONGAR		
वृक्षे ।	পাজি। আ	তদ্ধ।	তদ্ব।	पृक्षे ।	পংক্তি।	থওছ	গুদ।
851	২ নি	কিন্তুর	নিকিয়র	€68	0	मुहां वी	মৃড়াণী
820	২ ক	वदवां	করোর	200	6	নঃজত	'লরছত
836	*2 212		n n	563	2	কা	কো
825	্ গি		রি	609	9	ভাগয়	ভাপর
858	২ বখ	র	বগর	924	2	য়া	31
885	e 314	16	রাজত	686	9	পাণি	পানি
888	े थें।	ত্যুগ'	চঁহ্যুগ	Mar.			
845		শপ্ত	স্বসগু	659	र म	। श স न	। स श्र
888	৬ বা,		বা	1	রা		রা 🔪
864	১ নৱি		নারী				i. A
890	8 C4		*				le 스 커 '위
894	৪ অধ		অব				第1
892	e শর	गुर्व	রসারণ	400	4	মেয়ে	মেরে
81-0	৫ ভর	9	বরণ	602	2	ওলিয়া	আউলিয়া
	- 0			608	8	বাভোটবে	বছাইরে
		7		669	0	n	7
822	6 th 34	न में ध	N	NI WINE		ড়া	£1
		14		660	9	4-11	4
			न थे मे				10
669	২ পরব	ারদিগার	পরবরদিগার	390	0	গ ম প	ध श भ
660	e ঘোগির	<u>ামেরেন</u> ন	শেপিয়া			জা	খা '
			মেরেমন				
667	> ওয়ে	ৰাতে 🦠	উ রভা তি				<u>भ भ</u>
696	৪ উর		ভর	440	y	মহীমা	ষ্ যহিমা

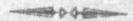
রাগরাগিণীর সময়, ঠাট ও জাতি।

রাগ।	স্ময়।	र्वावे ।	ল্লাভি।	বৰ্জিত।
ভৈৱৰ	দিবা ১ম প্রাহর	কোমল ঋ, ধ, তুই নি	মঞ্চার্	
বামকেশী	à	8	à	
ভাটিরারী	ঠ	(कांभव स, स	鱼	
যোগিয়া	ঐ	à ·	À .	
বাঙ্গালী	ঠ	a	B	
কণিসভা	\$	à -	à	
খট	\$	(कामल ब, ध, छूटे भ, छूटे नि	à	
टेखतवी	\$	কোমল ঋ, গধ, নি	B	
বিভাগ	- 8	ত্বাভাবিক	ঋাড়ব	ম
আশাবরী	দিবা ২৯ প্রাহর	কোমল ঋ, গ, ধ, নি	मच्यूर्व	
থাকারী	ঐ	à	\$	
खर्कवी	à	a .	্ৰ	
দরবারী ভোড়ী	· 3	कोमन थ, श, ध, नि, कड़िम	ঐ	
গুণকেলী	à	কোমল গু, ধ, ছই ম	ক্র	
গৌর সারজ	3	ছুই ম	ঐ	
বেলাবলী	<u> </u>	3	D	
আলাহিয়া	· Ø	স্বাভাবিক	à	
কোকৰ	ঐ	.5	8	
দেওগিরি	à	3	3	
সেফ্র	ğ	ছুই নি	3	
হ্থলবেলা ভল	à	a	5	
মধুমাধ্সারজ	ঐ	3	छेज	ग्रं, व
इक्तावबी गाउक	à	শ্বাভাবিক	8	श, य
ভীমপলত্রী	দিবা ৩য় প্রহর	কোমল গ, ছই নি	সম্পূর্ণ	

রাগ।	সময়।	शहे ।	জাতি।	বঞ্জিত।
दांकविकद	\$	à	ক্র	
বারোর	\$	চুই গু, ছুই নি	9	
যুণভানী :	দিবা ৪০ প্রহর	क्षांत्रण ६, श, ६, ६३ म	3	
পুরিয়া	4	কোমল ঋ, কড়িম	शंक्य	4
यांदरांश	3	2 5	- 3	
Dig	à	5	30	. 9
নাঞ্জণিরী	- 3	্কামল ধ, কড়িম	খাড়ৰ "	ч
কুমারী	à	কোমল ধ্ব, কড়ি ম	à	4
মানপ্রী	9	কড়ি ম	धेकृ व	9, 8
भावशे ।	à	কোমল থ, কড়ি ম	সম্পূৰ্ণ	
পুরবী	3	्यामन च, हुई म	1	
চৈতাগোঁৱী	1 3	কোমল ভ, ধ	à	
Str	8	6	\$	
धनवि	4	কোমল ভ, ব, কড়ি ম	8	Asset 1
बाउन	3		8	
পুরিয়াধানতী	- 1	3 10 10	3	
<u>বিবেশী</u>				
देवड्डी		4	5	
হীরাগ	- 5		4	
গৌরী	8	(कांचल थ, स, इहें प्र	à	
कलारेन	डॉलि ३म खंड्ड	কণ্ডি ম	'n	
ইমন	3		4	
ইমন কল্যাণ	4	इते व	8	
राशेर	- 5		à	
weist .			31	

রাগ।	नगरा।	ঠাট।	লাত।	বজিত।
খান	à	1	4	
ছারা	· à	3	à	
नहें ना वांची	à	অভোবিক	à	
নট ্	à l	a d	à	
ছায়ানট	Ď.	in the latest terms of the	3	
কামোদ	à	90 fet	8	
ন্টম্লার	à ·	à	à	
নিশাসাগ	à	à	鱼	Page 1
ভূপালী	à	দ্বাভাবিক	994	थ, नि
महदाही कानजा	5	त्कामल श्र, ४, वि	সম্পূৰ্ণ	
নায়ক]	রাজি ২য় প্রাহর	क्षिमण श, व क्षे नि	à	
আড়ানা	3	à	5	
गां रा न।	8	কোমল গ, মি	8	
বাগজী	3	Ď.	3	16.3
নিভূ	à	3	3	
সিগুড়া	3	কোমল গ, ছই নি	1	
মেভশাগ	8	8	à	
াহার	\$. à	8	
মহামনার :	5	8	3	
গাঁড়	<u> ১</u>	. 8	1 3	
मभ	à	ছই গ, ছই নি	3	
मय क्यसी	à	8	3	
1 व	4	3		
মথমিশ্র	à	3	খাড়ব	
रहरे	à	१ हैं नि	र कार्य इ.कार्य	

রাগ।	मभग्न ।	र्श है।	্ৰাভি ৷	বৰ্জিত
গোঁড়মলার	· 6	è	1 3	10.05
स्वम लांब	à	8	খাড়ব	গ
পারা	8	5	সম্পূর্	
তিগক কামোদ	3	ঐ	à	
পাহাড়ী	9	à	B	
খায়াজ	à	1 6	6	
ৰ্বিৰোটা	4	à ·	2	
नूम	9	স্বাভাবিক	à	
ন্লার	- A	9	8	
মেথ	3	ě	থাড়ব	
বদস্ত	à	কোমল ঋ, ছুই ম	3	4
मांगदकोन ।	à	কোমল গ, ধ, নি	छेड़व	- 1
পঞ্চম	à	কোমল গ	সম্পূর্ণ	18, 19
পরহ	ď	কোমল ঋ, ধ, কজি ম	3	
পিল্	10	কোমল গ, ধ	· 24	h is
বিদ্যা	Ď	কড়ি ম	F 8 %	
৭ক্রাভরণ	à	স্বাভাবিক	8	
रुएशन	রাজি ধ্য প্রহর	কড়ি ম	ঔড়ব	9, 9
বিহল্প	ě	इरे नि	পাড়ব	4
বহাগ	à	हरें म	गुच्लुर्ग	
मीहिनी	লাজি ৪র্থ প্রাহর	কোমণ গ	थाएव	어
গিত	3	কোমল ঋ, ধ, ছই ম	পাড়ব	어



স্থচীপত্র।

विवस		পূঠা	বিষয়				পূঠা
উপক্রমণিকা · · ·		6	কাহার্বা				00
সঙ্গীত সাধনা		34	মধ)মান				ØS.
স্থান্তর	***	56	আড়াঠেকা	***		1	08
শ্ৰুতি		34	পটতাল		***	***	00
স্থক		50	(স্ব	प्रमी जिमा	ত্ৰিক জাণি	51)	
মুর্চ্চনাও গ্রাম · ·		50	চৌ গ্ৰাল				26
কৃতি ও কোমল		25	একভাল!	***			05
গমক, গিটকারী ও মীড়		50	খেশ্টা	•••	-++	-11	૦૨
वामी ও विवामी		22	কালারী খে	म्हे।			90
গ্রহম্বর ও ভাগম্বর · ·		22	भागता			***	७२
রাগের প্রকার ও মাতি		22	আড়ংখন্ট।			1.14	७२
ছয় রাগ ও ছত্রিশ রাগিণী		20		(বিষমপদী	লাভি।)		
ঞ্পদ, থেয়াল ও টগ্নার লক্ষ	9	28	ধামার				रेक
মাত্রা	2.5.6	26	আড়াচৌতা				20
				91	111	***	N. 12
লয় ও তাল		२७	ভেওরা	e1 			
লয় ও তাল · সমপদী, ও বিষম্পদী				न्। 			23
		26	ভেওৱা	ष 			20 20
	·•• •••	26	তেওরা রূপক				43 43 43
गमलने. उ विश्वमलनो		26	তেওরা রূপক বাঁপতাল				23 23 20 00
সমপদী ও বিধমপদী হায়।		26	তেওরা কণক বাঁপতাল সুরকীকভাল	 1			23 23 00 00
সমপদী ও বিধমপদী… জায় । (সমপদী চতুর্মাতিক জ	រាំគ!) 	26	তেওরা রূপক কাপতাল স্বাফীকভাল প্রফানভ্যার	 1			23 23 20 00
সমপদী ও বিষমপদী হায় । (সমগদী চতুর্মাতিক হা কাওরালী	រាំគ!) 	26 2F 00	তেওরা রূপক বাঁপতাল স্বন্ধীকভাল প্রমূপক্যার ব্দ্মতাল	 1			20 20 00 00 03
সমপদী, ও বিষমপদী হায় । (সমপদী চতুর্মাতিক হ কাওবাধী চিমাতেতালা	រាំគ!) 	26 21 00 , 02	তেওরা রূপক বাঁপতাল অর্থনীকভাল প্রক্ষাকভাল ব্যাতাল ভেওট				22 22 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 00 0

[560]

			a commence and a	minn	more	marine
विसद		બુ કાં	বিষয়			পুঠা
ভাছুৱা মিলন		02	ভৈরবী "	7		4.8
श्मी উकादन		60	মধুমাধ্বারশ "	2	W.L.	43
স্তুরবোধক সঞ্চেত · ·		85	मानकी "			60
প্রবাধন · ·		80	मानदकोन		***	99
্দারগ ্	T 1		মূলতানী "		***	63
			মেখ		-34	98
আড়ানা—কাণ্যালী -		98	প্রীরাগ ,			68
ভালাহিয়া— " · · ·		6.9	শিক্সড়া ,	·		96
देशस— " …	-	4.0	扫 暇			98
ইমন কল্যাণ-বাপভাল		69	7			
কল্যাণ , …	-	20	ক্ষরট - ৯	**		90
কানভা কাৎবালী ···		93	হাখীর - "			45
			হিভোল "		77.6	95
(कामांद "		66		nim .		
গৌর শারন্ধ 🧳 😶		69	9	शम ।		
ছায়ানট " …	A.	10	ব্যাড়ানা—চৌতাল		411	809
তিলক কামোদ " …	***	984	, शंबाद	***		881
তোড়া "		4.3		***		889
পরজ " …	***	12		***		886
পূৰবী "	***	58	" ইলিভাদ			889
পুরিয়া " …		69	আশাবরী— "		264	70%
दशक्ष " …		96	আলাহিয়া—চৌতাং	Tank.	11	450
বিভাগ , …	1111	69	, ধানার			500
কুন্ধাবনী শার্গ কাঁপতাল	***	4.5	* Want	es)		50%
द्वशंभ कांख्वांनी	***	jr5	ইমন—চৌতাল	***		222
ভীমপদপ্রী , …		80				345
ভূণালী " …		69	и			205
देख्यं . "	***	62,65	» शमोद			259
					UNITED STATE	

	manin	money		
विषय		পৃষ্ঠা	বিষয়	পূচী
" ভালফের …		२०४	, সুরফাকা · · · ·	905
" তেওয়া ···	***	281	р в	008
ইমন কল্যাণ—চৌতাল	***	280	» ধামার ··· ·	908
, a		286	কোকৰ—ধামার	209
, ডিমাতে চালা		265	খটধামার · · · · · · ·	29
, প্রকাকা		260	থাখাল-চৌতাল	600
		240	и и го че	000
ু বাপতাল		405	, বাপতাল	100m
, ধামার…		260	, সুরফাতা	ರಲ್ಲ
,		200	গান্ধারী—চৌতাল · · ·	250
, তেওৱা		200	, ধামার	25.7
" আড়াচৌতাল		200	গারা—	959
্ল ব্লপক	***	366	গুর্জিরী—ঝাপতাল	250
কলাণ—চৌভাল …	***	234	গৌড়মলার—ধামার · · ·	092
কামোদ— " …		925	গোড়—চৌতাল	090
ু ধামার ···		010	গৌরনারল—চৌতাল	500
41 0		959	ু ধমার · · ·	306
" আড়াচৌতাল	***	022	, বাণতাল …	>45
কাফিভোড়ী—ধামার · · ·		>>8	গৌরী—চৌতাল	858
কাফিদিল্ল—বাঁপতাল—	41.	540	ছাথা—চৌতাল	600
কুমারী—চৌভাল …		509	ছিলানট—চৌতাল · · · ·	७०१
, ধামার …		255	× ধামার ··· ···	003
» পটতাল ···		520	" স্থুরহাজা	050
কেদারা—চৌতাল · · ·		२७२	জনজন্তী—চৌতাল · · ্	099
		228	" ধামার	450
, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,		355	জয়তত্রী—চৌতাল	209

					717.79		
বিধয়			পৃষ্ঠা	বিষয়			পৃষ্ঠা
অরেঁৎ-কা	পতাল …		966	मदे— "	***		२१७
ভিলক কামে	ाम (हो हो व		920	নটমলার—চৌতাল		10.52	999
,	ঝাপতাল		002	20 4 30			945
,	সুরফাক্তা		058	নারকী—ধামার			803
	তেওরা		७२६	্ বাঁপতাল	***		804
मत्रवाती कान	ড়া—চৌতাল	147	800	নিশাসাগ— ,			629
	n		809	পঞ্মধামার		4	5 28
			850	পরজ-চৌতাল	- /(4		934
	ø		810				825
n	D		829	, স্বফাকা			605
	ডি মাতে ভালা	***	850	" বাঁপভাল	-9.5		600
	थायात	***	820	20 . 10		- 4.	404
			214	,, ধামার	- ++	100	609
	বাঁপতাল		458	, তেওয়া			609
27	তেওরা…		805	পুরবা—চৌতাল			294
দরবারী তোড়	নী—চৌতাল		>>0	<i>a</i>			568
			220	, ধামার	- 44	**	368
	ধামার		336				26K
	স্বদাকা		339	" আঁপভাল	100		Sha
	ঝাঁপডাল		336	, ব্যৱহাণ			222
দেওগিরি—ই	পিতাল ·	+++	282	পুরিয়া-শামার	114		546
দেওবেহাগ—	-চৌতাল	***	585	পুরিয়া ধানত্রী—চৌ	ভাল		203
দেশ—তেওর			065	্ৰ গাম	वि	.,.	208
, श्क्रम	নত্যাত্তী · ·		062	বদন্ত—চৌতাল	***		85-9
धानश्री—को	ete		502	, ঝাপতাল			820
. 41 ग	বি	***	208	, সুরফাক্তা	***		8 8 8

0.0000000000000000000000000000000000000	annana			more	nonnon
বিষয়		পৃষ্ঠা	বিবর		পূৱা
বাগন্ধীচৌতাল	***	026	» ধামার ···	***	560
» ধামার ···		800	» ডিমাতেভালা		208
বাহার—চৌতাল · · ·		688	, বাঁপভাল		200
b 25 ***		888	» তেওয়া···	***	166
15 25		849	n n		390
_স জ্বকান্তা ···		846	ভূপালী—চৌতাল		369
, বাঁপভাল …		860	» স্থরফাকা ···		२१०
n n		865	৯ ধামার …		29%
» ধামার ···		868	ভৈরব—চৌতাল · · ·		69
n n		866	n n		66
, ভেওৱা …		869	,, ধামার …	1.4.4	bb
বিভাগ—ধামার · · ·	***	22	,, কাঁপতাল …	***	49
₅ চৌতাল ···		500	, সুরফাকা …	***	as
বিহঙ্গড়া—স্থুরকান্তা · · ·	• • • •	659	" আড়াচৌতাল		20
ু আড়াচৌতাল	***	६२৮	ভৈরবী—চৌতাল ···		505
ব্লাবনী সারপ—চৌতাল	***	586	,, বাঁপতাল …	4 9 8	306
» কাপতাল		189	" সুৰফাকা …	144	306
, ভেওরা		586	মধুমাধ সারজ-চৌতাল.		\$85
বেলাবলী—ধামার · · ·		588	্ল ধামার	100	562
বেহাগ—চৌতাল …		252	মলার—চৌতাল		080
" খাঁপতাল · · ·		653	मांद्रांशं─ः		358
» ধামার ···		650	মাল্যীচিমাতেতালা	***	555
, ,		ezz	মালগ্রী—হরকাক্তা	***	200
n u		428	মালকোশ—চোতাল		895
" · (Seal ···	***	eze	^{≱2} বামার ··•	***	848
ভীমপলন্সি—চৌতাল · ·		560	• তেওরা ···		896

~~~~~~~~~~~~~~~~~			manne manne		
বিষয়		পূষ্ঠা	বিষয়		পৃষ্ঠা
" বাঁপতাল		896	ञ्चनद्वना ७न,		20H
বিষামলার—চৌতাল · · ·		७৮२	বাণভাল		202
মুলতানী— " …		596	গোহিনী— " …	***	459
মেখ—ঝাঁপতাল …		988	হান্তীর—চৌ হাল		299
মেগমিশ্র " …		958			540
বোগিয়া—ধামার ···		36	, ধানার …		२५२
রামকেলী—আঁপতাল…		98			248
রাজবিধারতেওরা ···	111	599	,, স্থাকাভা	***	२৮७
ললিভ—চৌতাল …	***	603			२५५
শহরাভরণ,,		655	, , , , , , , , , , , ,		570
হীরাগ— "		239	হিভোল—চৌভাল ···		870
n n	***	250	» ধামার ···		81-0
» বাঁপতাল ···		220	্ ঝাপতাল · ·	-	85-6
সরক্দা—শামার		508	makeshed t		1
দিল্ডা— "		che	আলাপ ৷		
27 p · · · ·		064	ইম্ন কল্যাণ— · · ·	***	609
শিকু—চৌতাল		966	পুরিয়া—		808
ু ঝাঁপড়াল …		050	यांगदकोश	***	484
স্থাট—চোতাল	***	085	খেয়াল।		
n	***	480	আড়ানাকাওয়ালী ··		80¢
॥ श्रुकांकां		020	" ( জিবট ) " ''	***	1582
я "		068	ইगनमधामान ⋯	***	660
» ঝাঁপতাল ···		000			202
, , , ,	114	967	, আড়াঠেকা	***	425
🎍 ধামার · · · ·	, ***	000	ইমনকল্যাণএকতালা		632
স্থাই মরার—কৌতাল		060	, कांबग्रांगी	***	680

#### [ 5100 ]

विषय '		<b>옛</b> 됨 ·	विष <b>श</b>		পূঠা
" ( তেলেনা ) "		600	ভূপকল্যাণ (চভূৱল) কাওয়ালী		486
কামোদ—একভালা …		496	टेंडवरबाषाटिका · ·		656
কেলারামধ্যমান · · ·		645	মলার—তেওট …		560
ু কাওয়ালী …		600	রামকেলী –কাওয়ালী	•••	829
খামাজ—(চতুরজ), · ·		<b>684</b>	নলিভ—আড়কাওয়ালী	4.4	655
গৌরসারুদ্ধ—ক'ওয়ালী		७१७	শ্ৰুৱা—আড়াঠেকা ···	189	ಆಂಶ
ছায়ানট—ভেওট ···		698	ভাম-একতালা		467
ब्यक्शकी—चाड़ाटिका		636	, আড়াঠেকা		495
দর্বারী কানড়া—একতালা	***	663	শীরাগ—কাওয়াণী ···	***	908
দরবারী ভোড়ী—কাওয়ালী	***	600	मृत्रक्की─ "		950
নটমলার—একতালা · ·		693	, আড়াঠেকা		655
» কাওয়ালী ··		620	যাহানা— " …		७०२
,		020	ख्द्रें ज्रु		643
,, (তেলেনা) ,,	***	480	" একডালা …	***	६५२
পুৰবীআড়াঠেকা · · ·		459	,	***	646
" কাওয়ালী …		100	, কাওয়ালী		870
পুরিয়া—আড়াঠেকা …	***	600		***	670
বস্স্ত ,,	***	650	হাম্বীরআড়াঠেকা · · ·		600
বাগন্ধী— " …		692			
বাহার— " …		404	টপ্রা ।		
- , (ভেলেনা) কাওয়ালী		485	কাছি(হোরি) বং · ·		662
বিভাগ— ,		७२८	n n n n		693
বেহাগ— "		406	थाभाकर्रेश्ती	***	660
ভীমণলগ্ৰী—আড়াঠেকা		चंड्र	» কাওৱালী ···		840
ভূপালী—কাওয়ালী ···		69.9	বিবিট বেহাগ—আড়াঠেকা		666
» (তেবোনা) » ···	***	604	তৈলক্ষী থাছাজ—মধ্যমান	***	665

#### [ 310

					which has been been been been been been been bee
বিষয়		পৃষ্ঠা	विषय		পূৰ্চা
দেশ—কাওয়ানী ···		৬৭৫	কলিকড়া— ,	•••	938
পিলু— " …		400	খাহাজ—চুংরী · · ·		923
শিলু থাম্বাজ,		690	দরবারী কানড়াআড়াঠেক		909
ভৈরবী— " …	***	444	দরবারী ভোড়া	***	400
, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	***	5<0	নটনারায়ণী — কাওয়ালী	***	669
ভৈরবী বাহার—মধ্যমান	126	619	বাহার— "		625
মাঝ-কাওয়ালী …	***	666	বেহাগ—আড়াঠেকা		930
মিশ্ৰ বাহোয়াঁ—কাওয়ালী		693	ভীনপলনী—কাওয়ালী		909
নিছ—আড়াঠেকা …		600	ভৈত্বী—বাপতাল · · ·		629
দিশ্ব খামাজ—কাওরালী	144	699	ুঁ তেতালা …		938
বাঙ্গালা।			যোগিয়া—ভেওট		908
ইমন—আড়াঠেকা ··	***	640	ললিত—আড়াঠেকা ···		925
					173



#### প্ৰস্তাবনা ।

সঙ্গীত অতি প্রাচীন শাস্ত্র। বেদই তাহার প্রমাণ। বেদ গান মাত্র। পুরাণেও বহুন্থলে সঙ্গীতশান্ত্রের প্রসঙ্গ দৃষ্ট হইয়া থাকে। অতি প্রাচীনকালেই রাগরাগিণী প্রভৃতির সৃষ্টি ও সঙ্গীতের পুষ্টি হইয়াছিল। প্রাচীন সঙ্গীতের সহিত বর্তমান সঙ্গীতের অনেক বিষয়ে পার্থক্য পরিলক্ষিত হয়। কুরুক্ষেত্র সমরান্তে ভারত অবসাদ নিদ্রার অভিভূত হইরা পড়ে, ভারতের সর্ববিধ শক্তিই জড়তাগ্রন্ত হয়, সকল প্রকার উন্নতির স্রোতই রুদ্ধগতি প্রাপ্ত হয়, অনেকেই এইরূপ অনুমান করেন। অনুমানটি অয়োক্তিক নয়। অন্যান্ত বিদ্যাচর্জার ন্যায় সঙ্গীত চর্জারও এই অবসাদযুগে হীন্ত্রী হইরাছিল। মুদলমান শাসনকালে সঙ্গীতচর্চার পুনরভ্যুত্থান হয়। দিল্লীশ্বর আকবরের গৌরবোজ্জল রাজত্ব সঙ্গীতশান্ত্রের পুনরভ্যদয়ে অধিকতর গোরবারিত। সঙ্গীতগুরু তানসেন প্রভৃতি সঙ্গীতের পুনজ্জীবন প্রদান ক্রেন। ইহারাই নব্য সঙ্গীতের প্রবর্তক। ইহাদের রচিত গীতগুলি ভাব, ভাষা এবং হুর দকল বিষয়েই উচ্চ। দেগুলি দগীত-ভাণ্ডারের উজ্জ্বল অমূল্য রতা। এ রত্নগুলি বিস্মৃতির কবলিত হইলে সঙ্গীতশাস্ত্র নিতান্ত দরিদ্র হইয়া পড়িবে এবং সঙ্গীত-বিদ্যামোদী জনগণ ইহাদের অমৃতরসাস্বাদনে বঞ্চিত হইবেন। স্তরাং গীতগুলি প্রয়ত্ত্ব পরিরক্ষণীয়। সেই জন্ম আমি বহু পরিশ্রমে এই দকল গীত স্বরলিপি দহ লিপিবদ্ধ করিয়া দাধারণে প্রচারিত করিলাম। প্রাচীন গীভগুলিকে রক্ষা করাই এই গ্রন্থের মুখ্য উদ্দেশ্য হইলেও ইহাতে রচনা ও ভাব পারিপাটোর অনুরোধে আধুনিক ছুই চারিটি গীতও সন্মিবেশিত হইয়াছে। একণে গুণগ্রাহী স্থবিগণ যদি

এই গ্রন্থের রসাস্থাদন করিয়া তৃপ্তিলাভ করেন, তাহা হইলে শ্রম সফল জ্ঞান করিব।

হিন্দি গীত হিন্দিভাষায় অনভিজ্ঞ গায়কগণের মুখে অনেক স্থলে বিক্ত হইয়া পড়ে। গায়কগণ কেবল স্তারোখিত ধ্বনিরই অকুকরণ করিয়া যান, রচনার দিকে তত লক্ষ্য রাখেন না। যাঁহারা সঞ্চীত-বিদ্যা শিক্ষা করিতে ইচ্ছা করেন, হিন্দী শিক্ষা তাঁহাদের নিতান্ত আবশ্যক। গানগুলিকে ব্যাখ্যাসহ প্রকাশিত করিতে হইলে পুস্তক বাহুল্য হইয়া পড়ে, স্তরাং এই প্রথম উদ্যমে তদ্বিষয়ে ক্ষান্ত রহিলাম। পরিশিষ্টে তুরুহ শব্দের অর্থ দলিবেশিত করিলাম। এতৎ সন্নিবিফ্ট অধিকাংশ গীতই আমি মদীয় পূজাপাদ পিতৃদেব ৬ অনন্তলাল বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়ের নিকট শিথিয়াছিলাম। নব্য সঙ্গীতের গোরবের সময়ে দিল্লী যেরূপ সঙ্গীত শিক্ষার কেন্দ্রন্থল হইরাছিল, বাঙ্গালার বিফুপুরও সঙ্গীত চর্চারজন্ম সেইরূপ প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিল। গত শতবর্ষের মধ্যেও বিষ্ণুপুরে রামশক্ষর প্রভৃতির স্থায় সঙ্গীতধুরন্ধর ব্যক্তিগণ বিদ্যমান ছিলেন। পিতদেব, সঙ্গীতগুরু রামশঙ্করের প্রিয় শিষ্য ছিলেন। সহিত্ই বিষ্ণুপুরে সঙ্গীতের গোরব একরূপ নির্বাণোক্ষ্থ হইরাছে। বিষ্ণুপুরে এক্ষণে বাঁহারা সঙ্গীতশান্তে অল্লাধিক অধিকারের গৌরব করেন, তাঁহারা সকলেই প্রায় ইহারই শিষ্য। এই প্রাচীন গীতগুলি তিনি অতিযক্তে সংগ্রহ করিয়া রাখিয়াছিলেন এবং এই সকল গানকে বিশ্বতির আস হইতে রক্ষা করাও তাঁহার হৃদ্যের চিরন্তন অভিলাষ ছিল। আজ তাঁহার অভিলাষ-পুরণের স্তযোগ হইরাছে। এই গীতগুলির সহিত মদীয় স্বর্গীয় পিতৃদেবের নাম যদি চিরম্মরণীয় হয়, তাহা হইলে পরিশ্রমের প্রচুর পুরস্কার হইয়াছে জ্ঞান করিব।

মদীয় সঙ্গীতশিষ্য নাড়াজোলাধিপতি বিদ্যোৎসাহী, বদান্তবর, স্থধীশিরোমণি, সঙ্গীতজ্ঞ, শুভকীর্ত্তি রাজা শ্রীনরেন্দ্রলাল খাঁন মহোদয়ের প্রভূত উৎসাহে এবং অর্থান্দুকূল্যে এই সঙ্গীতগ্রন্থ মুদ্রান্ধিত ও প্রচারিত হইল। রাজা মহোদয়ের সাহায্য ব্যতীত এই সঙ্গীতগ্রন্থ কথনও লোকলোচনবর্তী হইত না এবং দরিদ্রের এই উচ্চ আশা স্থদয়ে উঠিয়া হাদয়েই বিলীন হইত। এই গ্রন্থথানি তাঁহার দানশীলতা এবং গুণগ্রাহিতা উভয়েরই উজ্জ্বল নিদর্শন। এই গ্রন্থ প্রচারে রাজা মহোদয় রাজোচিত গুণেরই পরিচয় দিয়াছেন এবং সঙ্গীত ও সাহিত্য জগতে একটি অক্ষয় উজ্জ্বল কীর্তিক্তম্ভ স্থাপিত করিলেন। তাঁহার নিকট আমি চিরক্তজ্ঞতা-পাশে বদ্ধ রহিলাম।

এন্থলে আমি, স্থাবর মহারাজ শ্রীযুক্ত যতীক্রমোহন ঠাকুর ও তদকুজ সঙ্গীতসর্গজ্ঞ রাজা শুর সোরীক্রমোহন ঠাকুর মহাশয় হয়কে ধন্যবাদ না দিয়া থাকিতে পারিলাম না, কারণ ইহাঁরাই এরপভাবে সঙ্গীত শাস্ত্র প্রচারের প্রথম পথ প্রদর্শক। ইহাঁদের উৎসাহ এবং আকুকুল্যে সঙ্গীতশাস্ত্রবিশারদ স্বর্গীয় ক্ষেত্রমোহন গোস্বামী মহাশয় অনেকগুলি সঙ্গীত-গ্রন্থ প্রণয়ন করিয়া সঙ্গীত-শিক্ষার পথ স্থগম করিয়াছেন।

অধিকস্ত স্বরলিপি প্রণয়ণ সম্বন্ধে আমার সহোদর সঙ্গীতকলাবিৎ ধীমান্ শ্রীমান্ গোপেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যায় বহু পরিপ্রমে

যথেক্ট সহায়তা করিয়াছেন। আমি তাঁহাকে অন্তরের সহিত
আশীর্কাদ করিতেছি, যেন প্রিয়তম গোপেশ্বর স্বীয় প্রতিভাগুণে

স্থাসমাজে সম্মানভাজন এবং সংসারে স্লখ শান্তি সমৃদ্ধির অধিকারী

হইতে পারেন।

পরিশেষে, কৃতজ্ঞতার সহিত স্থীকার করিতেছি যে, বিষ্ণুপুর

রাজবংশসন্তৃত ইন্দাস্ নিবাসী আমার প্রিয় বন্ধু বিবিধবিদ্যাবিশারদ শ্রীযুক্ত বার বলীন্দ্রনাথ সিংহদেব মহাশয় এই পুস্তক সংশোধন পক্ষে বিশেষ পরিশ্রম স্বীকার পূর্ব্যক আমাকে পদ্দম উপকৃত করিয়া-ছেন। কার্মনোবাক্যে ঈশ্বরের নিকট প্রার্থনা, তিনি যেন স্ক্রদেহে আজীবন পরহিত-ত্রতে ত্রতী থাকিয়া অক্ষয় কীর্ত্তিলাভ করিতে থাকেন।

## উপক্রমণিকা

সঙ্গীত প্রকৃতির স্বভাব। প্রকৃতি সঙ্গীতমরী। সিন্ধুর ভৈরব व्यातारव, करलानिमौत कनतरव, त्याचत श्रष्टीत निमारम, निर्वितिभीव ঝর ঝর নাদে, পশুগণের চীৎকারে, বিহঙ্গকুলের কলস্বরে, মধুপ বাঙ্কারে, পবন সঞ্চারে, শত প্রকারে সতত প্রাকৃতিক ব্যবহারে সঙ্গীতের ধ্বনি উঠিতেছে। ধ্বনি অনন্ত। ধ্বনি মনুষাহৃদয়ে বিবিধ ভাবের বিকাশ করে। মনুষ্যকণ্ঠেও বছবিধ ধ্বনি উত্থিত ইইতে পারে। জীব জগতে ধ্বনি, ভাব প্রকাশের দ্বার-স্বরূপ। হর্ষের ধ্বনি একরপ, বিয়াদের ধ্বনি অন্তর্রপ, এইরপ বিভিন্ন ভাবে কণ্ঠ-স্বরের পরিবর্তন হয়। আনন্দের উচ্চ রোল, বিয়াদের করুণ বিলাপ, ভয়ার্ত্তের কাতর প্রার্থনা, প্রেমিকের প্রণয় সম্ভাষ, ভক্তের প্রাণের উচ্ছাস প্রভৃতি ভিন্ন ভিন্ন ভাব, ভিন্নরপ ধ্বনিকে আশ্রয় করে। ধ্বনি নিহিতা ভাবোদ্ভাবিনী শক্তির স্ফার্ডি সাধনাই সঙ্গীত-শাস্ত্রের উদ্দেশ্য। নিসর্গ-সম্ভব কণ্ঠধানি সমূহের গুঢ় রহস্ত এবং গতিই সঙ্গীত শাস্ত্রের লক্ষ্য এবং আলোচ্য। অনিয়মিত রূপে স্তরের व्यालाश कतितल डांरवामीशन वा हिड्वितामन इस्र ना ; दत्तर শ্রুতিপ্রথের বা ভাবাবেশের ব্যাঘাত হয়। সেই জন্ম সঙ্গীতশাস্ত্র অনন্ত ধ্বনির জটিলতা ভেদ করিয়া বিভিন্ন স্বরের উৎপত্তি ও সম্বন্ধ নির্দ্ধারিত করিয়াছে; স্বররাজ্যে প্রবেশ পথ প্রগম করিতে তাহার গুপ্ত দার সমূহ উল্যাটিত করিয়াছে; স্বরের যথাস্থান স্মিবেশ, ভাব বিকাশ এবং চিত্ত বিনোদনের উপযোগী করিয়া ভিম ভিন্ন রাগ রাগিণীর সৃষ্টি করিয়াছে। সঙ্গীত শাস্ত্র,—বিজ্ঞান শাস্ত্র; ইহা 'স্বর-বিজ্ঞান' নামে অভিহিত। জড়স্থ শক্তিকে বৃদ্ধি কৌশলে

নিয়ন্ত্রিত করিয়া মানব কত প্রয়োজন অনায়াসে পূর্ণ করিতেছে।

য়রশক্তিকেও প্রয়োজনাত্ররপ শাসন শৃঙ্খলৈ নিয়ন্ত্রিত করিয়া মানব

চিত্ত বিনোদনের এক স্থলর উপায় উদ্ভাবন করিয়াছে। আর্যাজাতির সর্বতামুখী প্রতিভা স্বররাজ্যেও সন্দর প্রস্ফুটিত হইয়াছিল। যে মহীয়সী প্রতিভা জ্ঞানরাজ্যে স্লিগ্নোজ্ঞল প্রভায় জ্লীড়া
করিয়া জগৎকে চমৎকৃত করিয়াছে, সেই প্রতিভাই স্বররাজ্যেও

অত্যাশ্চর্য্য শক্তি প্রকাশ করিয়াছে। বিবিধ বিষয়ে মানব সমাজ
আর্যাজাতির নিকট ঋণী; সঙ্গীত বিষয়েও আর্যাজাতিই আদিগুরু।

ঐশ্বর্যাকুভৃতি আহা জীবনের প্রধান উপাদান। আহাজাতি সোল্ধ্যের উপাসক। জ্ঞানরাজ্যে এবং ঐশ্বর্যারাজ্যে আর্যাজাতির সুক্ষাদৃষ্টি সমভাবে পৃষ্টিলাভ করিয়াছে। স্বভাবে যেখানে সৌন্দ র্য্যের বিকাশ, আর্য্যজাতির দৃষ্টি সেইখানেই আকৃষ্ট। আর্যাজাতি প্রকৃতিপটে সৌন্দর্য্যের দূত্র ধরিয়া প্রকৃতির স্থন্দর দেবতাকে জ্ঞাত হইয়াছিলেন এবং স্বভাবের প্রেরণায় প্রাণের আবেগ সঙ্গীতের সংযত স্বরে ব্যক্ত করিয়া প্রাণ দেবতার আরাধনা করিয়াছিলেন। আরাধনার ইহাই সরল, সহজ, সাভাবিক প্রশন্ত পথ। ইহাতে শ্রম আছে, কিন্তু ক্লেশ নাই; ইহাতে কঠোৱতা নাই, মধনতা আছে : ইহা এক বদানন্দে বিপ্রমাথী ইন্দ্রিয় সমূহকে মোহিত মুদ্ভিত ও বশীভূত করিয়া চিত্তচাপল্য নাশ করে। ইহাতে প্রীতির প্রবাহ স্বতঃই অন্তরাভিমুখে অবিচেছদ গতিতে ধাবিত হয়। সেইজন্ম মহাযোগী মহেশ্বর সঙ্গীতের সাধক—ত্রিলোক-পূজিত মহর্ষি নারদ ত্রিভন্ত্রী তানে কণ্ঠ মিশাইয়া হরিনাম গানে সতত বিভার ;—মহা প্রভাব সম্পন্ন আর্য্য ঋষিগণ সামগানে সর্বময় দেবের উপাসনা করিতেন। তৎপ্রাপ্তির জন্মই নাদ দাধনা, তৎপ্রাপ্তির জন্মই দৃষ্টীত-

শাস্ত্রের উৎপত্তি। প্রাচীন থাবিগণের কথা ছাড়িয়া দিলেও, এ কালেও সাধক-জদয়ে সঙ্গীত অল্প প্রভাব বিস্তার করে নাই। জরদেব, বিদ্যাপতি, চণ্ডীদাস, গোবিন্দদাস, জানদাস, তুলসীদাস, স্থরদাস, বৈজুনাথ, রামপ্রসাদ, কমলাকান্ত প্রভৃতি সাধকগণ প্রাণের উচ্ছ্বাস সঙ্গীতে গাঁথিয়া দেবতার উদেশে উপহার দিয়াছেন। আবার যেদিন চৈতভাদেব জ্ঞানের কঠিন শৃষ্থাল তম করিয়া প্রেমের প্রাবনে ভারত ভাসাইরাছিলেন, সেদিনও তিনি সঙ্গীতের প্রাণোন্মাদিনী শক্তির সহায়তা লইয়া শত সহস্র প্রাণে ধর্ম্মভাব জাগাইয়া তুলিয়া-ছিলেন। সঙ্গীত মুমুক্ষুর পক্ষে মুক্তির সোপান। "গানাৎ পরতরং নহি" এই মহাবাক্য সঙ্গীতের প্রেষ্ঠত্ব বিঘোষিত করিতেছে।

দঙ্গীত ধর্মভাবের, এমন কি সকল ভাবের সহিতই জীড়া করে।
সঙ্গীত বহুতন্ত্রী হৃদয়-য়ন্তের সকল তারকেই স্পর্শ করে এবং সকল
তার হইতে সঙ্গীতের স্বর উত্থিত হয়। সঙ্গীত, ভাব-সমুদ্রের
পবন হিল্লোল; ইহা কথনও বা মৃত্রল নিঃশ্বাসে মানব হৃদয়ে
অপূর্বর লহরী-লীলা প্রকাশ করে, কথনও বা মহাবলে মানবহৃদয়ের
আমূল আন্দোলিত করে। প্রেমের আবেগ, প্রণয়ের আবেশ,
স্মেহের সোহাগ, সঙ্গীতেই স্থন্দর ফুটে—বিরহের হা হুতাশ, শোকের
মর্মোচছ্বাস, নিরাশার দীর্ঘ নিঃশ্বাস, সঙ্গীতেই স্থন্দর পরিস্ফুট
হয়। যে ভাব বাকেয় প্রকাশ পাইবার নহে—যে ভাব নয়নের
জলেও ব্যক্ত হয় না, সঙ্গীতে তাহার বিকাশ হয়। সঙ্গীত কথনও
কাঁদায়, কথনও হাসায়, কথনও বা অধীর করে—সঙ্গীত কথনও
উত্তেজিত, কথনও স্তান্তিত, কথনও বা অভিভূত করে। স্থবাতে যে
স্বাদ নাই, মধুতে যে মিফতা নাই, স্থরায় যে মাদকতা নাই, সঙ্গীতে
তাহা আছে। সঙ্গীত গরলে অমৃত উঠায়, অনশে শীতলতা আনে,

নীরসে রস সঞ্চার করে; সঙ্গীত কঠিন হাদ্যকে কোমল করে, উত্থ প্রকৃতিকে নম্র করে এবং তীব্র তেজকে মধুর করে। সঙ্গীত বিষাদ-তিমিরাচ্ছন্নহাদয়ে প্রীতির জ্যোৎস্নাভাতি বিকাশ করে, শোকদঝ প্রাণে সান্তনার শান্তিবারি সেচন করে, অলস জড়হাদয়ে উৎসাহের তরল তাড়িত প্রোত ঢালিয়া দেয়। যে হাদয় শত সিদ্ধুর গভীর গর্জনে, শত-বজ্রের একত্র নির্ঘোষে কম্পিত হয়না, সঙ্গীতের মধুরশ্বরে তাহা অভিভূত হয়। যে হাদয় নিরন্তর কঠোর কর্মো পায়াণ সম কঠিন হইয়াছে, সঙ্গীত তাহাকে বিগলিত করিয়া তলীয় বিশুদ্ধপ্রায় চিত্ত-বৃত্তিগুলিকে অয়ুরিত করে, যে হাদয় দয়্ধমরুভূমি সদৃশ একান্ত নীয়স, সঙ্গীত তাহাতে জীবনদায়িনী স্রোত্সিনীর সঞ্চার করে। সঙ্গীত ভাব-জগতের সঞ্জীবনী শক্তি।

সঙ্গীত অবসর বিনোদনের স্থলর উপায়। কঠোর জীবনসংগ্রামে পরিপ্রান্ত, অবসয়প্রাণে অমৃত প্রবাহ ঢালিয়া দিয়া সঙ্গীত
নূতন শক্তির সঞ্চার করে। এরপ নির্দ্দোষ প্রীতিপ্রদ আমোদ আর
দ্বিতীয় নাই। ইহাতে দেহমনের অবসাদ দ্রীছত হয়, মনঃ প্রাণ্
প্রকুল হয় এবং স্থানের স্কুমার রুতিগুলি বসন্তানিল-চুম্বিত-কুস্থমকোরকের ভায় ধীরে ধীরে ফুটিয়া উঠে। আমোদ ও দৈহিক
সামর্থ্যের জন্ম অনেক প্রকার জীড়া আছে, কিন্তু আমোদ ও নৈতিক
বলের জন্ম কেবল সঙ্গীত। প্রায় সকল প্রকার আমোদ প্রমোদেই
সঙ্গীর প্রয়োজন হইয়া থাকে; কিন্তু সঙ্গীব্যতীত শুদ্ধ সঙ্গীতেই
আনোদ উপভোগ করিতে পারা যায়। সঙ্গীত স্বতঃসিদ্ধ প্রীতর
নির্ম্যান; ইহাতে গায়ক সয়ঃ প্রীত হইবেন এবং অপর লোককেও
প্রীত করিতে পারিবেন। অনেক সময়ে প্রাণের স্করন্ত পিপাসা
সঙ্গীতের স্থধারদ ভিন্ন কিছুতেই নিরারিত হয় না। আবার জনেক

সময়ে প্রাণে এরপ বিষাদের কালিমা পড়ে, যাহা অন্থাবিধ আমোদ প্রমোদে অপনীত হইবার নহে। তখন প্রাণের সে জ্বালাময়ী কালিমা ধৌত করিতে সঙ্গীতের স্থাতিল ধারাই ফলদায়িনী হয়। আবার, আনেক সময়ে প্রাণের আবেগ রুজবেগ প্রোতস্থার ন্থায় হাদয়কে যখন দোলায়মান করে, তখন নিভুতে নির্ভানে একাকী একমনে সঙ্গীতের স্থরে প্রাণের আবেগ খুলিয়া দিয়া মানুষ ভৃপ্তিংজকুতব করে। এমন মানুষ নাই যে কখনও হাদয়ের আবেগে সঙ্গীতের আলাপ না করিয়াছে। সঙ্গীতশাস্ত্রে সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ নিস্গা স্থাত স্থকঠে বঞ্চিত ব্যক্তিও কখন না কখনও সঙ্গীতের মুখে মনের ভাব ব্যক্ত করিতে প্রয়াস পাইয়া থাকে। কেন না সঙ্গীতই মানব প্রাণের স্থাভাবিক আবেগ।

ভাব-বিভাবনে বা চিন্ত-বিনোদনে কাব্যেরও প্রভাব প্রভূত। কাব্যও অবসর বিনোদনের পবিত্র সহচর। তাহা হইলেও কাব্য সঙ্গীতের অনেক নিম্নস্তরে অবস্থান করে। কাব্যের উৎকর্ষ সঙ্গীতে। যে সৌল্বর্য্যাত্মভূতি কাব্যে বিকাশ পাইরাছে, সঙ্গীতে তাহা চরমোৎকর্ম লাভ করিয়াছে। জ্রুতি-মুখ সম্পাদনে ও ভাবোদ্দীপনে কাব্যের যে শক্তি আছে সঙ্গীতে তাহার শত সহস্র গুণ শক্তি বিরাজিত। জ্রুতি বিনোদনে বা ভাবোদ্দীপনে কবি, কবিত্বশক্তির সহায়তা গ্রহণ করেন বটে, কিন্তু তাহার শক্তি সঙ্গীর্ণ পরিধি মধ্যে আবদ্ধ পাকে। এ দিকে সঙ্গীতে এই শক্তি অবাধ জ্রীড়ার ক্ষেত্র পার। যেখানে যতটুক্ হইলে উদ্দেশ্য পূর্ণ হয়, সেইখানে ততটুক্ স্বাধীনতা ও স্থবিধা আছে। কবি কেবলমাত্র যতিমাত্রা বিরামে ভাষার সোষ্ঠব সাধন করেন, গায়ক যতিমাত্রাদির উপরও আরোহণ, অবরোহণ, কম্পন প্রভৃতি বিবিধ উপায়ে ভাষাকে

প্রাণস্পর্শিনী করিতে পারেন। কবির ভাষা অবশ্য ভাব বিকাশের উপযোগিনী: কথনও গান্তীৰ্য্যন্ত্ৰী, কথনও উদ্দীপনাম্যী, কথনও বা আবেগময়ী, কিন্তু কবির কবিত্ব সম্পদ্ ভাষাতেই নিবদ্ধ থাকে। হুগায়কের স্বর-বিভৃতি ভাষাকে অতিক্রেম করিয়া ধীরে ধীরে, স্তারে স্তারে, তরঙ্গে তরঙ্গে অনভের পথে ধাবিত হয় এবং এই কঠোর জালাময় সংসার হইতে আনাদিগকে তুলিয়া লইয়া যেন এক অনুষ্ট, অঞ্ত, অজ্ঞাত, স্বপ্নাজ্যে উঠাইয়া লয়। ভাব বিভাবন সম্বন্ধে স্বরের যে শক্তি আছে তাহা ভাষার অনপেক্ষ। -দুরশ্রেত, অস্ফুট, করুণ, আর্ত্তিশ্বর হৃদয়কে বিযাদিত করে তাহা অনেকেই অনুভব করিয়াছেন। এরপ স্থলে স্বরমাত্রই বিবিধালকারভূষিত ভাষার শক্তিধারণ করে। সঙ্গীতের পক্ষেও সেই কথা। কাব্যের প্রভাব ষেখানে প্রবেশ করিতে পারেনা, সঙ্গীতের শক্তি সেখানে ইন্দ্রজালের খ্রায় কার্য্য করে। ভাব সম্বন্ধে কাব্য এবং সঙ্গীতের পরীক্ষা একই নিয়মের অধীন। ভাবদৈশ্য কাব্যের এবং গীতের সমভাবেই গোরব হ্রাস করে, কেবল পদ-লালিত্য বা সরমাধ্য্য কাব্য বা সঙ্গীতের পক্ষে যথেক নহে। তবে প্রভেদ এই, অর্থহীন পদবিক্যাস শ্রেতিনধুর হইলেও তাহা অশ্রাব্য। কিন্তু সঙ্গীতের শুদ্ধ (তানে নে নে ও) চিত্ত-হরণ করে। সঙ্গীতে শুদ্ধ স্বর অবাধ্যয় কব্যি বলিলেও অত্যক্তি इश्र न।

বর্ত্তমান শিক্ষায় সঙ্গীতের প্রয়োজনীয়তা দিন দিন অনুস্ত হাই-তেছে। মনস্তত্ত্বিৎ মনীধিগণ সঙ্গীতকে সাধারণ শিক্ষার অঙ্গীস্তৃত করিতে উপদেশ দিতেছেন। পাশ্চাত্য-জগতে অনেক স্থলে সঙ্গীত সাধারণ শিক্ষার অঙ্গীস্ত হইয়াছে। সঙ্গীত চর্চ্চা দিন দিন প্রসার লাভ করিতেছে। প্রচলিত সাধারণ শিক্ষাকে অনেকেই নীরস অসম্পূর্ণ ও অনুপ্রোগী মনে করেন। প্রকৃত প্রস্তাবে প্রচলিত সাধারণ শিক্ষায় সাধারণ জ্ঞান সাধন পক্ষে মানব মনের যে সকল রুত্তির সংস্রব আছে, তাহারই বিকাশ পায়; অপর সকল রুত্তি ফুর্ন্তি পাইবার স্থবিবা পায় না, শিক্ষা অসম্পূর্ণ রহিয়া যায়; মানব মনের আংশিক বিকাশ হয় মাত্র। বিশেষতঃ ব্যক্তি ভেদে বিদ্যা বিশেষে আমুরক্তি স্বভাবতঃই জন্মিয়া থাকে। অসম্পূর্ণ শিক্ষায় শক্তির অন্তিম্ব পর্যান্ত বুঝিছে পারা যায় না; প্রকৃতি-নিহিত শক্তির বীজ চর্চার অভাবে অকুরেই শুকাইয়া যায়। যে বালক সঙ্গীত বা অন্ত কোন বিদ্যায় অন্বিতীয় পণ্ডিত হইতে পারিত, তাহার মানসিক শক্তি, আধুনিক সাধারণ শিক্ষার বিষয়সমূহে তাদুশ স্কৃত্তি না পাওয়ায় সে জড়বুদ্ধি মূর্থ নামে অভিহিত হইয়া সংসারে কীটদফ কুয়্ম-কোয়কের খায় শক্ত হইয়া যায়। এইজন্ত সঙ্গীত শিক্ষার প্রদার বৃদ্ধি করিতে অনেকেই আগ্রহবান। আমাদের দেশে বর্তমান শিক্ষার রিদ্ধি করিতে অনেকেই আগ্রহবান। আমাদের দেশে বর্তমান শিক্ষার মধ্যে চিত্রবিদ্যা প্রবেশ লাভ করিয়াছে। সঙ্গীত বিদ্যান্ত যোগ্যহান লাভে বঞ্চিত হইবে না, এইরপ আশা করা যায়।

দঙ্গীতশাস্ত্র যেরপে তেওঁ, ইহার সাধনাও দৈইরপ ছুরহ। কেবলমাত্র সাধনার প্রমের জন্ম ইহা তাদৃশ ছুরহ নহে। ইহার সাধনায় চিত্তগুন্ধি এবং চরিত্রের পবিত্রতা একান্ত আবশ্যক। উচ্ছঙ্গল ইন্দ্রিয় সমূহকে সতত দমনে রাখিয়া এবং চঞ্চল চিত্তবৃত্তিকে স্থির করিয়া সঙ্গীত-সাধনায় প্রবৃত্ত হইতে হয়। সঙ্গীতে দৈহিক স্বাস্থ্যও একান্ত প্রয়োজন। ইহাতে শাসমত্রে প্রভূত শক্তির আবশ্যক। শ্বাসকে দীর্ঘহায়ী করিতে না পারিলে সঙ্গীতে শক্তি সঞ্জার হয় না। অগায়ক,—সংযতেন্দ্রিয় যোগী। গানশিক্ষা এক প্রকার মোগশিক্ষা। ছু দশটি অভান্ত গান আবৃত্তি করিয়া মনোরজন

করিয়ে পারিলেই গায়ক হয় না। গায়কের চরিত্র দোষ শক্ষা করিয়া সঙ্গীতশাস্ত্রের পবিত্রতায় কলঙ্ক আরোপ করিলে অবিচার হয়। অবস্থা বাঁহারা প্রকৃত-প্রস্তাবে সঙ্গীত-সাধক, তাঁহাদের মধ্যেও ছই একজনের চরিত্র কথন কথন কলুবিত দেখিতে পাওয়া যায়; কিন্তু এরূপ দৃষ্টান্ত বিরল। জিতেন্দ্রির যোগিগণের যেরূপ পদস্থালন হইয়া থাকে, তাঁহাদের পক্ষেও সেইরূপ। তাঁহারা ছন্ধার্যের ফলভোগ করিয়া থাকেন। ছন্চিকিৎত্য ব্যাধির আজনণে জীবনের স্থথ চিরতরে নফ্ট হইয়া যায় এবং স্বরশক্তিও হীন হইয়া পড়ে। ফলতঃ বাঁহারা সঙ্গীতশাস্ত্রের আলোচনার জীবনোৎসর্গ করিতে চাহেন, তাঁহারা গুজাচার ও শুকাহার না হইলে সিদ্ধিলাভ করিতে পারিবেন না। সঙ্গীত শিক্ষার্থী, শরীরকে সবল, চিত্তকে প্রস্কুল্ল ও পবিত্র এবং আত্মাকে বিশুদ্ধ রাখিয়া সঙ্গীতচর্চা করিবেন।

সঙ্গীত সাধনায় সদ্গুরুর সাহায্য ব্যতীত সিদ্ধিলাভ অসম্ভব। *
কিন্তু আমাদের দেশে দিন দিন সদ্গুরুর সংখ্যা হাস হইয়া
আসিতেছে। আবার সঙ্গীত শিক্ষকগণের হাদ্যে উর্থা, কাপট্য
প্রভৃতি বিষ প্রবৈশ করায় অনেকস্থলে শিক্ষার অন্তরায় হইয়া
দাঁড়াইয়াছে। অনেক শিক্ষার্থীও শিক্ষকের নাম পর্যান্ত মূর্যে না
আনিয়া বরং তাঁহার নিন্দারাদ করিয়া থাকেন। কিন্তু এরূপ ভাব
লম্চেতা অল্পভ ব্যক্তিরই হাদ্য়ে স্থান পাইতে পারে।

সঙ্গীতকে অনেকে বিলাসের সামগ্রী বলিয়া মনে করেন।
সঙ্গীত অনেক সময়ে বিলাসিতার অঙ্গীভূত হইয়া পড়ে স্বীকার করি,
কিন্তু তাহা সঙ্গীতের ধর্ম নহে। যোগী হৃদ্ধ পান করেন যোগ
সাধনের জন্ম; ভোগী হৃদ্ধপান করেন ভোগ বাসনা পরিভৃত্তির জন্ম;

পদ্ধরূপাওয়েঁ ভেদ রাতাওয়েঁ জ্ঞান করে উপদেশ –ইত্যাদি ভূলনীদাস ।

দস্থ্য তুর্মপান করে পাশব বল বৃদ্ধির জন্য। তুর্মপানে শিশুদিণের জীবন রক্ষা হয়, ছগ্ধপানে বলবানের বলবৃদ্ধি হয়, ছগ্ধপানে সপের বিষকোষ পূর্ণ হয়; কিন্তু এজন্ম ছুগ্ধ দোষবাচ্য হইতে পারে না; সঙ্গীতের পক্ষেও সেই কথা। তামসী প্রকৃতি সঙ্গীতকে আপন ভাবে টানিয়া আনে এবং জঘন্ত জুগুপ্সিত আমোদে সঙ্গীতের ব্যবহার করে। স্কল ভাবে এবং স্কল অবস্থায় সঙ্গীতের অধিকার বলিয়াই এরপ ঘটিয়া থাকে। ভুমি সংসারত্যাগী বিষয় বিরাগী যোগী, সঙ্গীত তোমার প্রাণায়াম যোগ; তুমি ভোগবিমূচ বিলাসবিজ্ঞাল বিষয়ী, সঙ্গীত তোমার আনন্দের উৎস; তুমি অনলস পরিশ্রমশীল কর্মাবীর, সঙ্গীত তোমার অবসর বিনোদনের অমৃতর্ম; তুমি যুদ্ধ-বীর, সঙ্গীত তোমার রণোমাদের উৎসাহ তরঙ্গ। তুমি শ্রমবিমুখ হুখ-পরায়ণ ধনিসন্তান, সঙ্গীত তোমার কালহরণের পবিত্র সহচর। পণ্ডিত, মুর্থ, অশিক্ষিত, শিক্ষিত, ভদ্র, ইতর, ধনী, নির্ধন সকলের পক্ষে দঙ্গীত প্রথসেব্য প্রপথ্য। সেই জন্ম দঙ্গীতগুরু মহাকবি তানদেন বলিয়াছেন, "নাদ ঈশ্বররণী অমৃতর্দ", "যিত্না ঘাকো মিলে তিত্নোই পীজিয়ে," অর্থাৎ নাদ ঈশ্বররূপী অমৃতের রস; যাঁহার ভাগ্যে ইহার যতটুকু ঘটে, তিনি ততটুকুই পান করুন।

সঙ্গীত সর্বজনসেবনীয় স্থাসরিৎ। কিন্তু বর্ত্তমান সময়ে ইহার যোগ্যতার অত্যরূপ সম্মান এবং সমাদর নাই। সঙ্গীত আলোচনা-ভাবে। দিন দিন ক্ষীণ হইয়া পড়িতেছে; অয়ত্বে এবং উপেক্ষায় হাঁনশ্রী হইয়া পড়িতেছে। ইহা জাতীয় অধ্যপতনের একটি লক্ষণ। সঙ্গীত জাতীয় জীবনে অমিত শক্তি সঞ্চার করে। সঙ্গীতে জাতীয় ভাব পরিপুষ্ট হয়। চারণগণের উদ্দীপনাময়ী গীতি একদিন রাজ-পুত হৃদয়ে অদম্য। অনিবার্য্য বীর্যাশক্তি উদ্দিক্ত করিত। এখন সে বীর্যবোন প্রথণ নাই, সে স্বদেশ-প্রেমিক বীরও নাই, চারণগণের সে উদ্দীপনাময়ী গীতিশক্তিও লুপ্ত প্রায়। এখন জাতীয় প্রকৃতি অবনতি প্রাপ্ত হইয়াছে। সঙ্গীত অনেক পরিমাণে শুদ্ধ বিলাদেরই সামগ্রী হইয়াছে। এখন শঙ্কর, হিণ্ডোল, দীপক, তৈরব, নটনারায়ণ প্রভৃতির উত্তেজনাপূর্ণ ঝঙ্কার বীর রদের আবির্ভাব করে না। বিবিট, খাদ্বাজ, সিন্ধু, বসন্তবাহার, বেহাগ প্রভৃতির বিলাদ রসময় গুঞ্জন, প্রবণে, মনে, স্থারস ঢালিয়া দেয়। যাহা হউক জাতীয় রুচির পুনর্গঠনে হিন্দু সঙ্গীতশাদ্রের পুনরুজ্গীবন একান্ত প্রয়োজন। সঙ্গীতের প্রাণম্য়ী শক্তিকে পুনরুদ্বোধিত করিতে—জাতীয় প্রার্থার নবশক্তি-সঞ্চার করিতে—স্বদেশ-প্রেমিক স্থবীগণ অগ্রসর হউন,—সঙ্গীতের সর্ব্যাগ্রী শক্তি আবার জাগিয়া উঠুক।

#### সঙ্গীত-সাধনা

স্বর ও মাত্রা সংযোগে সঙ্গীতের সৃষ্টি। * মনুদ্য-কণ্ঠোথিত স্বর সমূহের উচ্চতা, কোমলতা, কম্পান প্রভৃতি নিয়মিত করিবার প্রণালী ইহাতে আলোচিত হইয়াছে। বাদ্য এবং নৃত্য, সঙ্গীতের সহচারিত্ব করে। সেইজন্য বাদ্য এবং নৃত্য সঙ্গীতের অঙ্গীভূত হইয়া সঙ্গীত শাস্ত্রের পূর্ণ ত্রিতয়ী মূর্ত্তি প্রকাশ করিয়াছে। গ সদ্গুরু সন্মিধানে শিক্ষালাভ ব্যতীত সঙ্গীত শান্ত্রে প্রবৈশের অন্য পথ নাই। তথাপি সঙ্গীত সম্বন্ধে অবশ্য জাতব্য কতকগুলি বিষয় এম্বলে সংক্ষেপে বিব্রত হইল। যাঁহারা সঙ্গীতশান্ত্রে গুরুপদিউমার্গে কথঞ্চিৎ প্রবেশ লাভ করিয়াছেন, তাঁহারা ইহার দ্বারা সঙ্গীত সাধনার মূল-তত্ত্বগুলির আভাস পাইবেন। এ গ্রন্থে নৃত্যাদির কোন বিশেষ উল্লেখ রহিলনা। সঙ্গীত সাধনা সম্বন্ধে নব্য-সঙ্গীত-নায়ক তানসেনের যে একটি গীত আছে, তাহাতেই সাধনার পথ নির্দিষ্ট হইরাছে। তানদেন গাহিয়াছেন "প্রথম খরজ, সাধ, উর ঋখব, গান্ধার, মধ্যম, পঞ্চম, ধৈবত, নিখাদ, স্থর সপ্ত, তিন গ্রাম, শুদ্ধ অক্ষর প্রমাণ : যুহ সব আপন মনমে যব সমঝাবে তব গুণিজন সোঁ নাদ কা চৰ্চ্চা কি জিয়ে। একইশ মুরছনা, উনপঞ্চাশ কোটি তান, বাইশ স্থরত তেঁ দব অঙ্গন সোঁ গাবে, ঠিক তান, শুদ্ধ তাল দাচি হুরন সোঁ উল্ট পলট কের ফের যাত সমুঝকর, ধুরপদকে ধরণ বিচার কর লি জিয়ে।" ষড়জ, ঋষভ, গান্ধার, মধ্যম, পঞ্চম, ধৈবত, নিখাদ এই সম্ব

[&]quot;ধাতৃ মাত্রা সমাযুক্তং গীতমিতাচাতে বুগৈঃ। তল নাদায়কো ধাতৃ মাত্রা চাক্ষর সঞ্চয়ঃ॥"—সঙ্গীতশাস্ত্র

[&]quot;গীতং বাদাং তথা নৃতাং ত্রিভিঃ দদীতমূচাতে।"—দলীতশাস্ত

20

দ্বরই প্রথম সাধনা। এই সপ্ত হারে, তিন গ্রাম, গুদ্ধ অক্ষর প্রমাণ যখন হার্মসম হইবে তথন গুণিজন নাদ চর্চার অধিকারী হইবেন। আবার সপ্তস্থর তিনগ্রামে দ্বাবিংশতি শ্রুচিত, একবিংশতি মূর্চ্ছনা, উনপ্রপাশতকোটি তান, শুদ্ধ তাল ও হার সহ এইসকলের সংযোগ বিয়োগে প্রপদের রূপ নির্দারিত হইবে। অতএব দেখা যাইতেছে সাতটি হার হইতেই বিবিধ হারের উৎপত্তি; এবং এই বিবিধ হারের সংস্থানের বিভিন্নতা ফেরফার উল্ট পাল্ট হইতে বিবিধ রাগ রাগিণীর হার্টি হইরাছে। তালের দ্বারা তাহাদের কাল ও জিয়া নির্মিত হয়। কাল সাজার অধীন। সংক্রেপতঃ সঙ্গীতশাজের ইছাই বস্তু নির্দেশ।

#### সপ্তস্থর বা সপ্তস্থর।

ষর সাতটা যথা— বড়জ, * খনত, গান্ধার, মধ্যম, পঞ্চম, ধৈনত, নিষাদ। এই সপ্তবিধ স্বরের আল্যক্ষর গ্রহণে সপ্তবিধ স্বর উজারিত হইরাখাকে * যথা— সা স্বা ল ম স্ব মালি সাধারণতঃ ইহা, সারগম নামে অভিহিত হয়। কথিত আছে, এই সপ্ত স্বর সাতটা জন্তর আভাবিক ধ্বনি হইতে গৃহীত। জীবগণের কণ্ঠ হইতে যে সকল স্বর নির্গত হয়, তথাধ্যে সাতটি প্রধান ৷ প্রকল্যা, স্কল্পইট বিভিন্ন সাতটি স্বরকে মন্ত্রা নিজকণ্ঠে আয়ত্ত করিয়া জাটল স্বররাজ্যে অধিকার লাভের প্রয়াস পায়। এরপ ক্ষেত্রে সভাবের অনুকরণ কিছু অস্বাভাবিক নহে। মন্ত্রের কেকা হইতে বড়জ; র্বভের নাদ হইতে খবভ; জাগের ধ্বনি হইতে গান্ধার; থকের শব্দ হইতে মধ্যম; কোকিলের কাকলী হইতে পঞ্চম; অশ্বের হেরা হইতে

यहे जात्रदश्च गणावा

ধৈবত ও মাতকের বংহতি হইতে নিযাদ এই সপ্তস্তর। * সকল স্বরে একাধিক স্বরের আভাস লক্ষিত হইতে পারে; কিন্তু স্বরের উত্থান বা লয় লক্ষ্য করিলে এই সপ্তবিধ স্বাভাবিক স্বরের সম্বন্ধ কাল্লনিক বলিয়া প্রতিভাত হইবে না। কল্পনা কথনও একবারে লক্ষ্যপুত্ত হয় না। কোন একটু সাদৃশ্য বা সম্বন্ধ না থাকিলে কেহই তুইটা বিভিন্ন পদার্থে সম্বন্ধের সূত্রপাত কল্পনা করিতে পারে না। গুণের তারতম্যান্ত্রসারে এক ধর্মাক্রান্ত বস্তু সমূহের বিভিন্নতা হয়। ধানির প্রকার বহুবিধ; কিন্তু সকলই ধানি। প্রতিদ মাত্র ধরনির তীব্রতায় বা দান্ত্রতায় (intensity)। ময়ুর এবং কোকিলের শব্দ পরে পরে শুনিলেই বুঝিতে পারা যায়, কেকা এবং কুছতে কি পার্থক্য। যাহাই হউক, যেমন লোহ, স্বর্ণ প্রভৃতি সকল ধাতৃই গুরু এবং ইহাদের তুলনায় অন্য পদার্থের আপেক্ষিক গুরুত্ব নির্দ্ধারিত হয়, এবং শ্বেত, লোহিত, নীলাদি সপ্তবর্ণ হইতে নানাবিধ বর্ণের বিকাশ হয়, আর একটি বর্ণের তুলনায় অপরগুলির গাঢ়ত্বাদিও নিৰ্ণীত হয়,—সেইরূপ এই সপ্ত স্বরকে অবলম্বন করিয়া সকল ধ্বনিরই পরিমাণ পাওয়া যায়। আবার এই সপ্তস্তরও এক ষড়জ হইতে অনুসূত হয়। ষড়জের সহিত অন্য স্বরের ভেদ তীত্র-তায় মাত্র। কেকা স্বর্যুকই স্বর পরিমাণের আদর্শে (unit বা standard) সুরুসপ্তকের ক্রেম নির্দ্ধারিত হইয়াছে। এই ক্রম একবার অধিগত হইলে গায়ক যে কোন স্বরকে আদর্শ করিয়া তদকুসারে ইচ্ছামত স্থরসপ্তক প্রকাশ করিতে পারেন। এবং এই হিসাবে ধ্বনিও।অনন্ত ; স্থরসপ্তকও অসংখ্য।

[&]quot;ময়ুর ব্যভচ্ছাগ-ক্রোঞ্চ কোকিল বাজিনঃ।
মাতজ্প ক্রেণাছঃ শ্বরানেতান্ স্বছর্তমান্॥"—সঙ্গীত-ছামোদর।

একণে দেখা যাউক এই সপ্তস্তারের ক্রম কি। অর্থাৎ সা হইতে ঋ, ঋ হইতে গা ইত্যাদি কি প্রকারে উত্থিত হয়। ইহাদের তীব্রতার (intensity)পার্থকা কিরূপ নিয়মে শাসিত। একস্থর হইতে অক্সস্থরে অবিচ্ছেদ গতি কেবল প্রবংশন্তিয়গ্রাম্ম : শুনিয়া ইহা লক্ষ্য করিতে হয় এবং লক্ষ্য করিতে করিতে ইহা আয়ত্ত হয়। এক বিন্দু তৈল জৰুপাত্তে নিক্ষিপ্ত হইলে যেমন অতি সূক্ষা গতিতে বিসৰ্গিত হইয়া জলের উপরিভাগে ব্যাপ্ত হয়, সেইরূপ অতি সূক্ষা তরঙ্গে এক স্কুর অন্য স্তুরে পরিণত হয়। এইরপ যতগুলি সুক্ষা তরঙ্গ স্থরান্তরে শ্রুতি-গোচর হইতে পারে, তাহাদের প্রত্যেকটিকে 'শ্রুডি' বলে। সপ্তক মধ্যেএইরূপ দ্বাবিংশতি ভাতি আছে।# সঙ্গীতশান্ত্রে এই শ্রুতিগুলি ভিন্ন ভিন্ন নামে কথিত হইয়াছে এবং তাহাদের জাতিভেদও নির্দ্ধে-শিত হইয়াছে। কিন্তু এ বিষয়ে বিস্তার আলোচনা এন্থলে নিপ্রোয়ো-জন। এন্থলে স্থবান্তরবর্তিনী শ্রুতিগুলির সংক্রিপ্ত পরিচয়ই যথেষ্ট। ষড়জ, মধ্যম ও পঞ্চমে চারিটি করিয়া, গ্রমন্ত ও ধৈবতে তিনটি করিয়া, এবং গান্ধার ও নিষাদে তুইটি করিয়া শ্রুতি। ণ অর্থাৎ স্তরান্তর প্রাপ্তি-কালে যতটুকু সূক্ষা স্বরভেদ কর্ণে অনুভূত হইতে পারে, তাহাতে বুকা যায় যে, 'দা' হইতে ঋএর মধ্যে ৪টি শ্রুতি, 'ঋ' হইতে গুএর মধ্যে ৩টি, 'গ' হইতে মএর মধ্যে ২টি, 'ম' হইতে পএর মধ্যে ৪টি. 'প' হইতে ধএর মধ্যে ৪টি, 'ধ' হইতে নিএর মধ্যে ৩টি, এবং 'নি' হইতে 'সা' ২টি।

 [&]quot;চতপ্রঃ পঞ্চানে বছজে মধ্যমে প্রভায়ো-মতাঃ।
 বৈবতে গুবতে তিপ্রঃ গে গান্ধারে নিযাদকে।"—-সঙ্গীত-রত্নাবলী।

क मा ब न म अ व ब नि भा

এইরপ ২২টি ও প্রতি-নিবদ্ধ সাতটি স্তর একত্রে সপ্তক ণ নামে অভিহিত হয়। স্থারে ক্রমোচ্চতা অনুসারে সপ্তাক অনেক হইতে পারে, কিন্তু মনুষ্যকণ্ঠ-নিঃস্ত স্থারে ত্রিসপ্তকই গণনীয়। এই ত্রিসপ্তক হালয় কণ্ঠ ও মন্তক হইতে উৎপন্ন হয়, তদনুসারে মন্ত্রু, মধ্য ও তার নামে অভিহিত হইয়াছে। সাধারণতঃ এই ত্রিসপ্তক উলাত্ত অনুদান্ত ও সরিৎ বা উদারা মুদারা ও তারা নামে অভিহিত হয়। গায়কেরা মুদারা সপ্তকেই সাধারণতঃ গীত গাহিয়া থাকেন; কথনও বা মুদারা সপ্তকেই সাধারণতঃ গীত গাহিয়া থাকেন; কথনও বা মুদারা সপ্তক হইতে তারাসপ্তকে কণ্ঠম্মর আরোহণ করে, কথনও বা উদারাসপ্তকে অবরোহণ করে। ধ্বনি স্থার ইইতে স্থরান্তরে উঠিলে আরোহণ বা অনুলোম নামে অভিহত হয়; এবং স্থর হইতে স্থরান্তরে নামিলে অব্রোহণ বা বিলোম নামে কথিত হয়। যথা—

মুদারাসপ্তক

ভারাসপ্রক

সা ঋ বা মা পা ধা নি সা ঋ বা মা পা ধা নি ইহা অনুলোম বা আরোহণ সাধনা।

যুৰারাসপ্তক

উদারাসপ্তক

নি ঘ প ম ল আ সা নি ঘ প ম ল আ সা এবং ইহা বিলোম বা অবরোহণ দাধনা।

তীব্র। কুম্ঘতী মন্দাছন্দব্তান্ত ষড়জগা।
দরাবতী রঞ্জনীতু রতিকা চর্যজ্ঞেন্ততা।
রৌজী জোধী চ গান্ধারে বজ্ঞিকাথ প্রসারিণী।
প্রীতিশ্চ মার্জনী চৈব শ্রুতরো মদামে স্থিতা।
ফিতিরক্তাচ সন্দীপন্তালাগিন্তাপ পঞ্চম।
মদন্তী রোহিণী রমোতাতিশ্রন্ত চ বৈবতে।
উগ্রাচ ক্যোভিনীতি ছে নিষাদে ক্যিতে বৃইন্ধান স্ক্রীতনান্তং।

"ততঃ সপ্রস্বাঃ জন্মাঃ বিক্কৃতা ছানশাগামী।"—সন্ধ্রীতন্দর্পন।

"ততঃ সপ্রস্বাঃ জন্মঃ বিক্কৃতা ছানশাগামী।"—সন্ধ্রীতন্দর্পন।

"ততঃ সপ্রস্বাঃ জন্মাঃ বিক্কৃতা ছানশাগামী।"—সন্ধ্রীতন্দর্পন।

"স্ক্রীতন্ত্রপন্তা স্বালিক্যান্ত্রিকার স্ক্রিকার ছানশাগামী।"

"স্ক্রীতন্ত্রপন্তা স্বালিকার জন্ম বিক্রুতা ছানশাগামী।"

"স্ক্রীতন্ত্রপন্তা স্বালিকার স্কর্মান্তর্যান্ত্রিকার স্কর্মান্তার স্কর্মান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রিকার স্কর্মান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রিকার স্কর্মান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রিকার স্কর্মান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রনান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্র্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রান্তর্যান্তর্যান্ত্র্যান্তর্যান্ত্রান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্র্যান্তর্যান্তর্যান্তর্যান্ত্রান্তর্যান্তর্যান্ত্র্যান্তর্যান্তর্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্তর্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্তর্যান্ত্র্যান্ত্রান্তর্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্তর্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্র্য

এই সপ্তস্তরের কোন একটি স্তরকে অবলম্বন করিয়া অপর স্থরগুলিতে আরোহণ বা অবরোহণ সঙ্গীত শাস্ত্রে মুর্চ্ছনা * নামে অভিহিত হইয়াছে। এই সপ্ত স্থরের মধ্যে তিনটি স্থর প্রধান বলিয়া পরিগণিত। এই প্রধান তিন হার হইতে তিনটি গ্রামের উৎপত্তি। এই তিন গ্রাম তান এবং মূর্চ্ছনার প্রধান আত্রায়। এই তিন গ্রামের নাম ষড়জ, মধ্যম ও গান্ধার ; অর্থাৎ 'দা'কে অবলম্বন করিয়া যে স্বর্ঞান তাহা ষড়জ, 'মা'কে অবলম্বন করিয়া যে স্বর্থান তাহা মধ্যম এবং গান্ধারকে অবলম্বন করিয়া যে স্বর্গ্রাম তাহা গান্ধার। এই তিন গ্রামে স্থরের মূর্চ্চনা একবিংশতি সংখ্যক। অর্থাৎ সা, ঋ, গ, ম, প, ध, नि, मा; अ श, म श ध नि मा अ; श म श ध नि मा आ श, ইত্যाদि সপ্তবিধ মূর্চ্ছলা প্রত্যেক গ্রামে সাধিত হইতে পারে; এইরূপে ত্রিসপ্ত সংখ্যক মূর্চ্ছনা গণিত হয়। কিন্তু তিন গ্রামের মধ্যে তুই গ্রাম মানব জগতে প্রচলিত। তন ধাতুর অর্থ বিস্তার; তান শব্দে স্থারের বিস্তার বুঝায়। স্নতরাং স্থার হইতে স্থারান্তরে অন্যুলোম বা বিলোম গতিতে মূর্চ্ছনাদির ছারা রাগের বিস্তার বুঝার। তান দীর্ঘ স্থায়ী স্বর্মাত্র। ইহা প্রায়শঃ প্রপদে ব্যবহৃত হয় না। খেয়াল এবং টপ্লাতেই ইহার হাবিকাশ। হারও দ্বিবিধ,—শুদ্ধ বা প্রাকৃত : কুত্রিম বা বিকৃত। সপ্তস্থারের যে স্বাভাবিক ক্রেম আছে, তাহাই প্রকৃত শুদ্ধ সূর। কিন্তু দঙ্গীতে এই স্বাভাবিক ম্লথকে কর্থনও বা কোমলভাবে কথনও বা তীব্ৰভাবে গ্ৰহণ করিতে হয়। স্বাভাবিক স্তুরে যখন এই কোমলতা বা তীব্রতা আনিতে হয় তথন সেই স্তরকে বিকৃত বলা যায়। সাধারণতঃ সঙ্গীতের ভাষায় ইহার নাম

mb-4212 84-18/9/04

[&]quot;আরোহণাবরোহেণ ক্রমেণ স্বর সপ্তকম্। মুর্চ্চনা শব্ধ বাচাং হি বিজ্ঞোয়ং তদ্বিচক্ষণৈঃ ॥"—মাতজ।

কড়ি, কোমল; অংশাৎ উচ্চ হার কড়ি এবং নিমাহার কোমল। এইরূপ ৭টি স্বাভাবিক শুদ্ধ প্রাকৃত হার এবং ঐ সপ্তাহার হাইতে ৫টি বিকৃত হাইয়া দাদশটি হার গৃহীত হাইয়াছে। # যথা প্রাকৃত হার সা ঋ গ ম প ধ নি, বিকৃত হার,—

#### 南 有 有 有 一

স্থারে অধিকতর মনোহারিত্ব আনিবার জন্ম গমক, কম্পন, আশ, মীড়, গিটকারী প্রভৃতি ব্যবহৃত হইয়া থাকে। গমক কম্পনের সামান্য নাম। কম্পন স্থর বিশেষের ক্রুতান্দোলন। আশ বর্ণান্ত-র্বর্তী স্ববের তুই বা ততোধিক স্থারে অবিচ্ছেদে বিকাশ। মীড় আশেরই ঘনত্ব। শিবাস্থারে মীড়ের দৃষ্টান্ত বেশ বুঝাযায়। গিটকারী একাধিক স্থারের আশসহকৃত ক্রুতোচ্চারণ।

গিটকারী দ্বিবিধ—সাদা ও দগমক। ভূষিকা, হুর বিশেষের পূর্বের বা পরে অন্য স্থরের স্বল্লোচ্চারণ। সাধারণতঃ হুর দম্বদ্ধে যে সকল বিষয় জ্ঞাতব্য তাহা বর্ণিত হইল।

বিবিধ স্থারের যথাস্থান সন্ধিবেশে রাগরাগিণীর মুক্তি প্রকাশিত হয়। রাগ রঞ্ধাতু হইতে উৎপন্ন। রঞ্ধাতুর অর্থ রঞ্জন বা চিত্তবিনোদন। যেরূপ ভাবে স্থার বিভাসে চিত্তরপ্রন সাধিত হয়, সেইরূপ স্থার বিভাসে ভিন্ন ভিন্ন রাগরাগিণী স্থিটি হইরাছে। প অর্থযুক্ত বাক্য বা ছন্দে রাগ রাগিণী নিবদ্ধ না করিয়া, তেনে তুম প্রস্তুতি কতকগুলি বর্ণের দ্বারা আরোহণ, অবরোহণ, মূর্চ্ছনা, কম্পন,

 [&]quot;বড়জোহচলঃ পঞ্চমশ্চ খবভশ্চলতি স্বরঃ।
 গান্ধারো মধ্যমশ্চার্থ নিষাদো ধৈবতশ্চলঃ॥"—সঙ্গীত লামোদর।

^{† &}quot;বন্ধ প্রবণমাত্রেণ রঞ্জন্তে সকলাঃ প্রাক্তাঃ। সর্বেষাং রঞ্জনাজেতো স্কেন রাগ ইতি শ্বতঃ॥"—সোমেশ্বর।

তান, লয় প্রভৃতি যোগে কেবল স্থরমুখে রাগাদির পরিচয়ের নাম আলাপ। আলাপে রাগরাগিণীর স্থরময়ী মূর্ত্তি প্রকাশিত হয়। রাগরাগিণীতে যে স্থরটির প্রধানতা দৃষ্ট হয় তাহার নাম বাদী—যে স্থরটি বাদীর সহচারিত্ব করে, তাহা সংবাদী এবং যে সকল স্থর এই উভয় স্থরের অনুগমন করিয়া শ্রুতি স্থুখ সম্পাদন করে, তাহারা অনুবাদী নামে অভিহিত হইয়াছে এবং যে স্থর রাগ বিশেষে বিভান্ত অপর স্থরগুলির সহিত অনৈক্য হয় তাহা বিবাদী। ৼ রাগের আদি স্থর গ্রহম্বর, এবং অন্ত্য স্থর ভাসম্বর নামে অভিহিত। সঙ্গীতে ছল্দ চতুম্পদী গৃহীত হওয়ায় রাগরাগিণীর আলাপেও সেইরূপে চারিটি অংশরূপে দেখান হয়, আহায়ী, অন্তরা, সঞ্গারী, আভোগ। প্র

রাগ তিন প্রকার শুদ্ধ, সালস্ক, ও সঙ্কীর্ণ। স্বয়ংসিদ্ধ রাগ শুদ্ধ রাগ। ঞ ছই রাগের সন্মিলন যে রাগে ঘটিয়াছে তাহা সালস্ক এবং ছয়ের অধিক রাগের মিশ্রেণে যাহার উৎপত্তি তাহা সঙ্কীর্ণ। স্থর সংখ্যানুসারেও রাগের জাতিভেদ দৃষ্ট হয়। যে রাগে সপ্তস্থরের

 [&]quot;স্বামিবরদনাঘাদী স রাগ প্রতি পাদকঃ।
 বাদিনা সহ সংবাদাৎ সন্ধাদী মন্ত্রিভুল্যকঃ॥
 মূপে তপ্তান্তবদনাদত্রবাদীত ভূতাবং।
 তথা বিবাদাক্তেনৈর বিবাদী বৈরবস্কবেৎ॥"—সঙ্গীত-রন্ধাবলী।

 [&]quot;যত্রোপবেশুতেরাগঃ আফারীকাচাতে হি সঃ।
 আভোগস্বস্থিমো ভাগো গীত পূর্ণত্ব স্তচকঃ॥
 ক্রবাভোগাস্তরে কন্চিদ্বাতুক্তেশস্তরাভিধঃ।"—সঙ্গীত-দর্পণ।

 [&]quot;সদ্যোজাতাক প্রীরাগো বামদেবারসম্ভকঃ

অযোরাইন্তরবোভূতৎপুরুষাৎ পঞ্চমোভবেৎ।

ঈশানাভান্মেঘরাগঃ নাট্যারস্তে শিবাদভূৎ

গিরিজারা মুখারাতে নটনারারণো ভবেৎ।"

বিকাশ হয়, তাহার নাম সম্পূর্ণ রাগ। যাহাতে এক স্থর বর্জিত অর্থাৎ ছয় স্থরের বিকাশ তাহার নাম বাড়ব বা থাড়ব এবং বাহাতে ছই স্থর বর্জিত অর্থাৎ পাঁচ স্থরের বিকাশ তাহার নাম ওড়ব। * শাস্ত্র মতে রাগ ছয় ও রাগিণী ছত্রিশ। রাগ ও রাগিণী গণের নাম সম্বন্ধে শাস্ত্রে ভিন্ন ভিন্ন মত দৃষ্ট হয়, এতদতিরিক্ত মিশ্রা রাগরাগিণীও অনেক স্থট হইয়াছে। রাগগুলি পুরুষ; রাগিণীগুলি স্ত্রী। প্রতাকে রাগের ছয়টি পত্নী। এইরূপে প্রত্যেক রাগের রহৎ পরিবার। সে সকলের সবিস্তার পরিচয় এম্বলে অসম্ভব; সকল রাগ রাগিণীও এক্ষণে প্রচলিত নাই। রাগ রাগিণীগুলির আলাপের কালও নিরূপিত আছে। এবং ভিন্নভিন্ন রাগ রাগিণী ভিন্ন বি ভাবেরও উপরোগী বলিয়া বর্ণিত হইয়াছে। বর্ত্তমানে ব্রক্ষার মতামুবর্ত্তী রাগ ও রাগিণী নিম্নে প্রদর্শিত হইল। শ্রীরাগের ভার্যা—নালশ্রী, ত্রিবণী, গৌরী, কেদারী, মধুমাধবী, পাহাতী।

বসন্ত রাগের ভার্ঘ্যা—দেশী, দৈবগিরি, বৈরাটী, টোরিকা, ললিতা, হিণ্ডোল।

পঞ্চন রাগের ভার্য্যা—বিভাস, ভুপালী, কর্ণাটী, পঠহংসিকা, মালবী,

ভৈরব রাগের ভার্য্যা—ভৈরবী, বাঙ্গালী, সৈন্ধবী, রামকেলী, গুরুরী,

মেঘ রাগের ভার্য্যা—মল্লারী, সৈরিটী, সায়েরী, কৌশিকী, গান্ধারী, হরশৃঙ্গার।

 [&]quot;উডবঃ পঞ্চিত্তৈক যাড়বঃ বট স্বরো ভবেৎ।
 সম্পূর্ণঃ সপ্ততিকৈব বিজ্ঞেরো গীত্রোকৃতিঃ।"—নারদ (সদীত-রত্নাকর)।

নটনারায়ণ রাগের ভার্য্যা—কামোদী, কল্যাণী, আভিমী, নার্টিকা, সারঙ্গী, হাম্বিরী।

আলাপে রাগাদির স্থরময়ী মৃর্ত্তি এবং গানে তাহাদের বাঙ্মায়ী মৃর্ত্তির প্রকাশ হয়। গানও নানা প্রকার যথা;—ধ্রুবপদ বা ধ্রুপদ, খেয়াল, টপ্পা। ললিত পদ বিভাসে ধ্রুপদ অর্থাৎ ভজন।

ভাব প্রগাঢ়তা ও রচনা-গান্তীর্য্য প্রপদের লক্ষণ—ইহা ওজঃ প্রসাদ ও মাধ্র্য্য গুণ বিশিষ্ট। এবং ইহাতে চারিটা বাণী প্রচলিত যথা, গওরহার, নওরহার, ভাগর এবং খাণ্ডার বাণী। গোয়ালিয়র হইতে গওরহার, লাহোর হইতে নওরহার, দিল্লী হইতে ডাগর ও কান্দাহার হইতে খাণ্ডার বাণীর উদ্ভব, এইরূপ কথিত আছে। থেরাল—অল্লাক্র ললিত পদ বিশিষ্ট কবিতা বিশেষ। ইহাতে আদি করণ প্রভৃতি রস ভাল খুলে এবং হারের ক্রীড়া অধিক প্রকাশ পার।

টিপ্লা। ইহাও ললিত পদ বহুল এবং লঘুভাবের উপযোগী। প্রাচীন হিন্দু সঙ্গীত শাস্ত্রে সপ্তস্থরের আবার পৃথক্ পৃথক্ জন্ম স্থান, জাতি, বর্ণ, ইফাদেবতা, স্ত্রী ও পুত্র নির্দ্ধিট আছে। # এবং ঐ

[&]quot;জন্মাক-কুশ-ক্রোঞ্জালারী-ব্যুতনাময় ।
বীপের পুদরে চৈতে জাতাঃ ষড়জাদরঃ ক্রমাৎ ॥"—সঙ্গীত-রত্নাকর ।
পঞ্চমো মধ্যমঃ বড়জ ইত্যেতে ব্রাক্ষণাঃ স্বতাঃ ।
গ্রুতো ধৈবতশ্চাপি ইত্যেতো ক্রক্রিয়াবুটো ॥
গান্ধারশ্চ নিষাদশ্চ বৈপ্রাবর্জন বৈ স্বতৌ ।
শুলবং বিদ্যি চার্জেন পতিত্বারসংশয়ঃ ॥"—নারদ-সংহতা ।

"কুক্ষবর্ণো ভবেৎ ষড়জ অষভঃ স্বক্ষপিজরঃ ।
কনকাভন্ত গান্ধারো মধ্যঃ কুন্দ-সমপ্রভঃ ॥
পঞ্চমন্ত ভবেৎ পীতো ধৃদরং ধৈবতং বিদ্যা
নিষাদঃ শুক্রবর্ণঃ ভাৎ ইত্যতঃ স্বর্বর্গভা ॥

সপ্তস্তরের মনের সহিত সম্বন্ধও স্থিরীকৃত রহিয়াছে। * এ সম্বন্ধে সবিস্তার আলোচনার বিশেষ প্রয়োজন নাই; এজন্য শাস্ত্রীয় প্রমাণ গুলি মাত্র প্রদত্ত হইল—

অনেক ক্ষেত্রেই গীতের সহিত বাদ্যের সংযোগ থাকে। বাদ্য সঙ্গীতের মাত্রার অনুগামী হয়। গীতের ছন্দ ও বাদ্যের ছন্দ, গীতের কোঁক ও বাদ্যের কোঁক, একরপ। বাদ্য সন্থন্ধে মাত্রা ছন্দ লয় ও তালই প্রধান আলোচ্য বিষয়।

#### মাতা।†

একটি স্বর উচ্চারণ করিতে যত সময় লাগে তাহাকে মাত্রা বলে। মাত্রা ত্রিবিধ যথা হ্রস্ব, দীর্ঘ, প্রৃত। একটি হ্রস্ব স্বরের উচ্চারণকাল হ্রস্মাত্রা, ছুইটি হ্রস্ব স্বরের উচ্চারণকাল দীর্ঘমাত্রা; তিনটি বা ততোধিক হ্রস্ব স্বরের উচ্চারণকাল প্রত মাত্রা। য়ঃ হসন্ত বর্ণোচ্চারণের নাম ব্যঞ্জন ইহা অর্দ্ধ মাত্রা। অর্থাৎ একটি মাত্রাকে আদর্শ করিয়া তদকুসারে মাত্রার ক্রম নির্দারিত হইবে। কোন কোন মতে একটি বর্ণের বা পাঁচটি বর্ণের দ্রুতোচ্চারণে যে সময় লাগে তাহার নাম মাত্রা। ইহাকেই আদর্শ ধরিলে তদকুসারে অত্যান্ত মাত্রা নিয়মিত করিলে ফল একই হইবে। যাহাকে ছয়্ম মাত্রায় প্রকাশ করা যায় তাহাকে বার মাত্রাতেও উচ্চারণ করা যাইতে পারে। মাত্রা, বাদ্য এবং গীত উভয়েতেই দৃষ্ট হইবে

 [&]quot;স—রী বীরেহছুতে রোলে ধো বীভংগে ভয়ানকে।
 কার্যো গ—নী তু করণে হাস্য শৃঙ্গারয়োর্মপৌ।"

[†] মাত্রা তু যাবতাপাণিঃ পর্যোতি জাতুমগুলে।— শ্রুতিবোধ।

চাৰজেকান্ বদেয়াত্রা ভিনাত্রোবায়নোবদেং।
 বিমাত্রন্ত শিখী ক্রয়াৎ ব্যঞ্জদ্ধনাত্রকয়॥

ইহাই বাদ্য এবং গীতের কাল ও ছন্দ নিরূপিত করে। মাত্রার উচ্চারণবিধি এবং বিরাম ছন্দের জনক। এইরূপে বাদ্যে যেরূপ ছন্দ ধ্বনিত হয় গীতেও সেইরূপ ছন্দ নিবদ্ধ থাকে। কারণ বাদ্যের ছন্দ, গীতের অনুকরণেই এথিত।

লয় অর্থে সাম্য অর্থাৎ সমান হওয়া বা মিশিয়া যাওয়া।

স্থানাং স্থানে মাত্রা ছন্দ ও তালের দহিত একীকরণ বা নির্বৃতিই
লয় শব্দের বাচ্য। স্থারের উত্থান, আকাঞ্জন ও নির্বৃতি আছে।
আলাপের সময় ইহা মাত্রা মাত্রেই লক্ষিত হয়, এবং গীতের সময়
ইহা ছন্দাকারে লক্ষিত হয়। লয় ত্রিবিধ,—বিলম্বিত, ক্রুত ও মধ্য।

যাহাতে স্থারের মিলন অল্লমায়ী তাহা ক্রুত লয়; যাহাতে দীর্ঘস্থায়ী
তাহা বিলম্বিত; এবং যাহাতে এই স্থায়িত্ব দীর্ঘও নহে অল্লও নহে,
তাহা মধ্য লয়। প গানের স্থর মাত্রাকে অতিক্রম করিয়া বিতারিত
করিলে অথবা বাদ্যের বিসন্থানী হইলে লয় ভঙ্গ হয়। গানের স্থারে,
এবং বাদ্যের ধ্বনিতে ওতপ্রোতভাবে মিলনে সর্ব্রদাই লয় লক্ষ্য
হয়। বিশেষতঃ প্রত্যেক সমে ইহা গুদ্ধভাবে ফুটিয়া উঠে এবং
এইরপ গতিতে মাক্ষ 'সমে' অর্থাৎ শেষ 'সমে' মোক্ষ অর্থাৎ
শেষ 'লয়' স্পাইটভাবে অমুভূত হয়। শেষ সমেই স্থারের পূর্ণ
নির্বৃত্তি।

স্থরের কাল পরিমাণ ঠিক রাখিতে এবং ছন্দ স্থস্পট করিতে তালের উৎপত্তি। তাণ্ডব এবং লাশ্য এই চুই শব্দের আদ্য অঞ্চর

 [&]quot;ক্রতো মধ্যো বিলম্বন্দ ক্রতঃ শীঘ্রতমায়তঃ।
 বিশুবৌ বিশুবৌ ক্রেয়ো তত্মান্মধ্য বিলম্বিতৌ॥"—সঙ্গীত দর্পন।

^{† &}quot;তালঃ কাল ক্রিয়ামানং লয়ঃ সাম্যমথাস্ত্রিয়াং। বিলম্বিতং ক্রতং মধ্যং তথ্নমোহং ঘনং ক্রমাৎ॥"—অমরকোষ।

গ্রহণে 'ভাল''শব্দ গঠিত হইয়াছে। । এইরূপ তালের উৎপত্তিমূলে নুত্যের সহিত সংশ্রেবই অনুসূচিত করে। যাহাই হউক কাল এবং ছল তাল দারা নিয়মিত হয়। গানে স্থরের ছল ভঙ্গ বা সময় ভঙ্গ इहेटलहे जाल-७ अप अर लग्न-७ अप इहेटन । अहे अस्य शास्त्र अवर तारमा সর্বদা সঙ্গতি আৰশ্যক। ইহা সাধারণতঃ "সঙ্গত" নামে কথিত হয়। "সম" অর্থাৎ বাদ্যের প্রারম্ভ ও গীতবাদ্যের বিশ্রাম স্থল। তাল চতুৰ্ভাগে বিভক্ত; -- সম, বিষম, অতীত, অনাগত বা অনাঘাত। মতভেদে তাল ত্রিবিধ: — দম, অতীত ও অনাগত। ইহার মধ্যে 'সম' সম্বন্ধে শুদ্ধ জ্ঞান হইলেই যথেক্ট। বং প্রত্যেক তালে হাতের তালি বা অঙ্গুলির টকর ছারা তালের ভাগ সূচিত হয় এবং তালি বা টকরশূন্য ভাগও প্রদর্শিত হয়। যথা, চৌতাল বার মাত্রার তাল। ইহাতে চারিটি তাল এবং তুইটি ফাঁক অর্থাৎ ইহার চারিভাগে হাতের তালি বা অঙ্গুলির টকর দেওয়া হয় এবং ছুইভাগে দেওয়া হয় না, এইরূপ কাওয়ালী চারি ভাগে বিভক্ত। ইহার তিন ভাগে তালি বা টকর থাকে এবং একভাগ শৃত্য। যাহা হউক ইহা সাধারণ হিসাব, ইহা প্রায় সকলেই অবগত আছেন।

স্থারের মাত্রা এবং ছন্দ, তালের মাত্রা এবং ছন্দের নিয়ামক; অর্থাৎ স্থারের মাত্রা এবং ছন্দকে লক্ষ্য করিয়া তালের মাত্রা এবং ছন্দ গ্রাথিত হইয়াছে। এইরূপ একটি তালের মাত্রা এবং ছন্দকে সমভাবে বিভক্ত করিয়া তালি এবং ফাঁক প্রদর্শিত হয়, তাহাতে

 [&]quot;ভাওবভাদাবর্ণেন লকারো লাভ শক্ষভাক্।
 যদা সক্ষত্তে লোকে তদা তালঃ প্রকীর্ত্তিতঃ ।"—সঙ্গীতার্ণব।

^{। &}quot;গীতোচ্চারণ কালেতু যদা তালতা সক্ষতিঃ। তদা সম ইতি প্রোক্তং সমকাল সমুদ্ধবাৎ।।

কখনও বা তালি এবং ফাঁকের মাত্রা সমান থাকে, কখনও বা অসমান থাকে। এই হিসাবে তাল ছুই প্রকার, যথা; সমপদী এবং বিষমপদী। তালের অংশগুলি সমমাত্রিক হুইলে তাহা সমপদী এবং বিষমমাত্রিক হুইলে তাহা বিষমপদী। সমমাত্রিক তাল অবার ছুই প্রকার যথা, — চতুর্মাত্রা ও ত্রিমাত্রা। এন্থলে প্রচলিত তাল সমূহের ঠেকা, পদ, মাত্রা প্রভৃতি সংক্ষেপে প্রদর্শিত হুইল।

### চৌতাল—( সমপদী ত্রিমাত্রিক।)

চোতাল বার মাত্রার তাল। তমধ্যে চারিটী আঘাত ও তুইটী শৃত্য থাকে। ঠেকা যথাঃ—

ধা ধা দিন্তা ক ভাগে দিন্তা তেটে কতা গৈদা ঘেনে।

#### ধামার।

ধামার চৌদ্দ মাত্রার তাল তন্মধ্যে তিনটা আঘাত ও ছুইটা শুক্ত থাকে। ঠেকা যথাঃ—

क रंग रहे रंग रहे था शक्ति कि रन हो।

## আড়া চৌতাল।

আড়া চৌতলে চৌদ্দমাত্রার তাল। তন্মধ্যে চারিটা আঘাত এবং তিনটা শৃষ্য। ঠেকা যথাঃ— * ধা গে ধা গে দিন্ তা কং তাগে দিন্ তা তেটে কতা গদি ঘেনে।

#### ভৈওরা।

তেওরা সাত মাত্রার তাল, ইহাতে তিনটী আঘাত। ঠেকা যথাঃ—

ধা খেনে নাগ দি খেনে নাগ্। রূপক।

রপক সাত মাত্রার তাল। কলাবিৎগণ ইহার সমের উপর আঘাত না দিয়া তথায় ফাঁক দিয়া সম্ নির্বাহ করেন, ভঙ্জন্ম সমের জায়গায় ফাঁক দিয়া লিখিত হইল, গানেতেও ঐ প্রকার লেখা আছে। ওই ফাঁককেই সম্ বুঝিতে হইবে। ঠেকা যথাঃ—

তাগ দিং তা তাগ তেটে গদি ঘেনে।

### "বাঁপতাল—( বিষমপদী।)

ঝাঁপতাল দশ মাত্রার তাল, তন্মধ্যে তিনটা আঘাত এবং একটা শৃষ্য। ঠেকা যথাঃ—

धा रंग धा रंग मिन् जा दें था रंग मिन्।

# সুর ফাঁকতাল।

স্থর ফাক্ দশ মাত্রার তাল, তন্মধ্যে তিনটী আঘাত এবং ছুইটী শুন্ম। ঠেকা যথাঃ—

ধা ঘেনে নাগ দি ঘেনে নাগ গ দি ঘেনে নাগ।

[চিমাতেতালা—(সমপদী চতুর্মাত্রিক।)

চিমাতেতালা যোল মাত্রার তাল, তক্মধ্যে তিনটী আঘাত এবং একটী শৃষ্ঠ। ঠেকা যথাঃ—

। গৈ দিন তা তেটে দিং তা ধা দিন তা কতা তেটে কতা গদি খেনে।

### 'পটতাল।

পটতাল আট মাত্রার তাল, তন্মধ্যে একটী অঘাত ও একটী শৃহ্য। ঠেকা যথাঃ:—

ধা গৈ ধা গে দিন্তা কতা।

#### পঞ্চম সওয়ারী।

পঞ্চ সপ্তয়ারী ত্রিশমাত্রার তাল, ইহাতে পাঁচটী আঘাত ও তিনটী শৃত্য। ঠেকা যথা:— ভাগ দিং ভাগ দিং ধা কেটে ভাগ থু মা কেটে ভাগ ভেরে
কৈটে ভাগ দিং ভা কেটে দিন্ ভা ভাগ ভেটে ভেটে ভাগ
নি ধা কৈটে ভাগ।

#### ব্ৰাতাল।

ব্রহ্মতাল আটাশ মাত্রার তাল ইহাতে দশটী আঘাত এবং চারিটী শূক্ত । ঠেকা যথা :—

ধাদিৎ থুমা ধাগে তেটে তাগ্ থুমা ধা কেটে তা ধা

কৈটে তা থুমা ধাগে দিন্ তা কেটে তাগ্ তাগ্ তেটে দিন্।

#### 'একতালা

একতালা বার মাত্রার তাল চারি মাত্রা করিয়া তিনটী সমান পদে বিভক্ত। ইহার ফাঁক নাই, তজ্জনাই ইহার নাম এক্তালা, কিন্তু তিন মাত্রা করিয়া চারিটীপদে বিভক্ত করিলে লয় আরও সহজ হয়, তজ্জ্যু তিনটী আঘাত এবং একটা শৃহ্য দিয়া লিখা হইল। ঠেকা যথাঃ—

ধিন্ধিন্ না না ধিন্না ক তে ধা তেরে কেটে ধিন্না।

### ে খেম্টা।

খেম্টা বার মাত্রার তাল ইহাতে তিনটা আঘাত ও একটা শৃস্থ । ঠেকা যথা :—

ধা কৈটে না ধি না তেটে ধিনা ধিনা।

কাশ্মীরী থেম্টা।

ধিগ না ধা তি না

দাদ্রা।

দাদ্রা ছয় মাত্রার তাল ইহাতে একটা আঘাত ও একটা শৃষ্য।
ঠেকা যথা:—

ধা ধি না না ধি না। ত্যাড় খেমটা।

আড় থেম্টা বার মাত্রার তাল ইহাতে তিনটা আঘাত এবং একটী শূন্য। ঠেকা যথাঃ—

তেটে তিন্তা তা ধিন্ধা তেটে ধিন্তা তা ধিন্তা।

## े ঢিমাতেতালা।

চিমাতেতালা যোলটি দীর্ঘ মাত্রার তাল ইহাতে তিনটী আঘাত এবং একটী শৃক্ত। ঠেকা যথাঃ— †

। ধা ধিন্ ধা বিং তাগে তেরেকেটে বি না তিন্ তিন্ তা

কং ধাগে তেরেকেটে বি।

#### * কাওয়ালী।

কাওয়ালী আটটী দীর্ঘ কিন্তা বোলটী হ্রস্থ মাত্রার তাল, ইহাতে তিনটী আঘাত এবং একটী শৃত্য। ঠেকা ষথাঃ—

भी थि मिना ना थि थिना ना छि छिना ना थि थिना। 'ठू९ ति।

ঠংরি আট মাতার তাল, ইহাতে একটা আঘাত ও একটা শৃকা।
ঠেকা যথা:—

ধা ধা কেটে তাগ্ না ধি ধা তেরেকেটে।

## 'ছেপ্কা।

ছেপ্কা আট মাত্রার তাল। ঠেকা বথা:—

†

বিক্ নাতে কৈটে তাগ্ তিক্ নাতে কেটে তাগ্।

কাহারবা।

কাহার্বা আট মাত্রার তাল। ঠেকা যথা:—

†

থাগ্ তেটে নাক্ ধিন্ তাগ্ তেটে নাক্ ধিন্।

#### মধ্যমান।

সংযোগ যোলটা দীর্ঘ মাত্রার তাল। ঠেকা যথা:— সহজ করিবার জন্ম বত্রিশটী ব্রস্থ মাত্রায় লিখিত হইল।

सा चि था चि था चि था चि था चि था चि छ। कि छ। कि

## আড়াঠেকা।

আড়াঠেকা আটটী দীর্ঘ কিম্বা বোলটী হ্রম্মাত্রার তাল। ঠেকা যথা:--

তা যি যি য যি খা যি যি তা কি।
'তেওট্।

তেওট চৌদ মাত্রার তাল। ঠেকা যথা ঃ—

ধি ধা ধা ধি ধি ধা তিতা তি তা তা ধি ধি ধা তিতা

যৎ।

য়ং চৌদ মাজার তাল। ঠেকা যথা:—

+

খা ধিন্ ধা গে তিন্ না তিন্ ধা গৈ ধিন্।

# তামুরা-মিলন।

যন্ত্রের সাহাত্য ব্যতীত স্বর সাধনা হইতে পারে না, তৎপক্ষে তান্তর অতি প্রয়োজনীয়। হার্মোনিয়নের সাহায্যে সরসাধন করিলে, উজাঙ্গ হিন্দু-সঙ্গীতের উপযোগী কণ্ঠস্বর হইতে পারে ন।। কেন্না হাজোনিয়ম শ্ৰুতি বিহীন যন্ত্ৰ, মিড যুক্ত দঙ্গীত বাজাইবাৰ উপায় নাই। বিশেষতঃ হিন্দু সঙ্গীতে অধিকাংশই মিড ব্যবহৃত হইয়া থাকে। আধুনিক কতকগুলি গায়কদের মধ্যে হার্মোনিয়নের আদর অধিক দেখিতে পাওয়া যায়, কেননা তাঁহারা গীত গাইবার নময় অন্ত ব্যক্তি দারা হার্মোনিরম দক্ষত ( ক্রেশ ) করাইয়া গীতের সাহায্য লইয়া থাকেন। এই প্রথাটি যেন গোলে হরিবোল দেওয়ার ভাষ, ইহা শ্রুতি মধুর না হইয়া বরং বিপরীত হইয়া থাকে। অনেক সময় দেখা যায় যে হাশোনিয়মের ঋথবকে অর্থাৎ D স্থরকে ষড়জ আশ্রয় করিয়া গীত গাওয়া হয় এবং তৎসঙ্গে সঙ্গত (ক্রন্স) করাও হয়। হার্মোনিয়মের অর অতি জমকাল বলিয়া কেইই তত লক্ষা করেন না; নচেৎ ইহাতে শ্রুতির দোব ঘটে। কারণ মড্জ হইতে ঋথনের অন্তর চারিটী শ্রুতি, আর ঋথন হইতে গান্ধারের অন্তর তিনটী শ্রুতি, স্কতরাং ঋথনকে যড়জ আশ্রয় করিলে, গাছার ঠিক ঋখন হইবে না; ধৈবতেও এ প্রকার। সেতার, এস্রাজ প্রভৃতি যন্ত্রে স্থান-সাধনা করা যাইতে পারে, কেননা ঐ সমন্ত যন্ত্রের পরদা ইচ্ছামত সরাইতে পারা যায়। আধুনিক কেহ কেহ ভাষুরাকে উপেক্ষা করিয়া, হাশ্মোমিরমকে স্থমিক্ট স্বর লাভ করিবার উপযুক্ত আদর্শ বলিয়া উল্লেখ করেন। কিন্তু তাহা মিতান্ত আয়োক্তিক। কারণ, স্বরের মিউতা ঈশ্বর-দত্ত স্বাভাবিক শক্তি; সাধনা বা কেই

দ্বারা উহার কর্কশতা পরিবর্তন করিয়া মধুরতা লাভ হয়। না। কর, কোন ব্যক্তির স্বর অতি মিই এবং গিট্কারি যুক্ত, আর কোন ব্যক্তির স্বর মোটার উপর কর্কশ এবং গিট্কারি বিহীন। এ গিট কারি বিহান ব্যক্তি এ গিট কারিযুক্ত ব্যক্তির সহিত স্বর সাধনা করে, তাহা হইলেই কি তাহার স্বর প্রমিষ্ট গিট কারিযুক্ত হটবে ? কোকিলের স্বরের অনুকরণ কাকের পক্ষে যেমন অসম্ভব, কর্কশস্ত্রও মিফ্ট হওয়া সম্বন্ধে তজ্ঞপ। তবে পরিমার্জনাতে অপেকাকত ভাল হইতে পারে। বিশেষতঃ মনুষা-কণ্ঠের সর কর্কশ হইলেও, স্থারে বসাইতে পারিলেই গীত গাহিবার উপযুক্ত হয়। স্বর-সাধন পক্ষে তাস্থ্রাই বিশেষ উপযোগী। তাম্বুরায় চারিটী তার থাকে, কণ্ঠস্বরের ওজনবিশেষে # মধ্যের ছুইটা তারকে মুদারা আমের যভজ করিয়া বাঁধিতে হয় ও বামদিকের তারটী ঐ জডির উদারার পঞ্চম এবং দক্ষিণের তারটা ঐ জুড়ির উদারার যড়জ করিতে হয়। উদারার যড়জ বাঁধিবার রীতি এই যে, ঐ তারটীতে গান্ধারের ধ্বনি উৎপন্ন হইরা বড়জে আসিরা শীন হয়। ঐ রূপে অগ্রে তাশ্বরাটী বান্ধিরা, জুড়ির স্বরের সহিত কণ্ঠপর ঐক্য করিবে, এবং তাহাকে মুদারা গ্রামের ষড়জ স্থির করিয়া, ক্রমান্বয়ে এক এক স্থর চড়াইরা, অপর ছয়টী স্থর নির্গত করিবে। এইরূপে মুদারা, উদারা এবং তারাসপ্তক অনুলোম বিলোমক্রমে পুনঃ পুনঃ যে পর্যান্ত হর সকল শুদ্ধ ও স্পাইরূপে কটে প্রাকাশ না পায়, ভাবৎ সাধনা করা কর্ত্তব্য। তামুরাকে স্বর-সাধনার আদর্শ করিলে,

শুজন অর্থাৎ তানপুরার ভুড়ি ছটা এরপভাবে বাধা উচিত যে উদারার মধাম ও
তারার পঞ্চন গর্যান্ত অরেশে কণ্ঠ হইতে নিগত হয়। ত্রিসপ্তক পূর্ণ নিঃসারিত করিতে
পারিশে উত্তম হয়। প্রকৃত ব্রখাচর্যাদি না থাকিলে কণ্ঠ হইতে ত্রিসপ্তক বাহির হয় না।

প্রত্যেক ব্যক্তির কণ্ঠস্বরের ওজনমত স্থর বাঁধিয়া লইতে পারা যায়; কিন্তু হার্মোনিয়মকে আদর্শ করিলে যে সকল দোষ ঘটে, তাহা পূর্বের উক্ত হইয়াছে। ইচ্ছা করিলে স্বরঞ্জ ব্যক্তিয়ণ হার্মোনিয়মের ঋথব, অথবা ধৈবতকে যড়জ করিয়া যথাক্রমে আরোহণ করিলেই উক্ত দোষ উপলব্ধি করিতে পারিবেন। স্থতরাং হার্মোনিয়মকে স্বর-সাধন বিষয়ে স্বর্ধশ্রেষ্ঠ স্থান না দিয়া, তামুরা এবং গুরুপদেশকেই আদর্শ স্থানীয় করা স্ব্রতোভাবে কর্তব্য।

## হিন্দী উচ্চারণ।

হিন্দী গানগুলি পড়িবার সময় হিন্দুস্থানী ধরণে উচ্চারণ না তরিলে ত্রুতিমধুরতা নফ্ট হয়। গাহিবার সময়েও উচ্চারণহীনতায় ক্রতিকট্তা উৎপাদিত হয়। বিশুদ্ধ সঙ্গীত শিক্ষা করিতে হইলে হিলী গান ভিন্ন উপায় নাই, অতএব যাঁহারা হিন্দুস্থানী সঙ্গীত শিক্ষা করিবেন, তাঁহাদের হিন্দী ভাষা শিক্ষা করা প্রয়োজন। হিনী ভাষা যেরূপ বর্ণবিক্থাদে লিখিত হয়, এই পুস্তক সেইরূপ বর্ণবিত্যাদে লিখিত হইয়াছে, ধাঁহারা হিন্দী ভাষা জানেন না, তাঁহাদের উচ্চারণ বিশুদ্ধ হইবে না, তজ্জন্ত হিন্দুস্থানী উচ্চারণ-প্রণালী সম্বন্ধে তুই এক কথা বলা আবশ্যক বোধ করি। গন্তঃস্থ বঞার উচ্চারণ "ওঅ" তজ্জন্য বাঙ্গালাতে অন্তঃস্থ বঞার বি এইরূপ দক্ষেত করা গিয়াছে। যথা—ধ্যাৰত (ধ্যাওঅত) গাৰে ( গাঁওয়ে ), খাল বা গৰাল ( গওয়াল ), অন্তঃত্ব 'য়'এর উচ্চারণ "ইয়া"; যথা—য়হ (ইয়হ বা ইয়েহ); "ঐ"এর উচ্চারণ বাহালা ভাষাতে 'ওই' হয়, কিন্তু হিন্দীতে ''আয়্" হইবে যথা— এদি (আয়েদি), তৈদি (ভ্যায়দি), কৈদি (ক্যায়দি), মৈ (ম্যার্), হৈ ( ফার্), "উ"এর উচ্চারণ বাঙ্গালা ভাষাতে "ওউ" হয়, কিন্ত হিন্দীতে "অও" হইবে বথা—ওর ( অওর), গানের উচ্চারণ-দৌকর্ব্যার্থ কখন কখন অন্ত্য স্বরের লোপও হইয়া থাকে :

যথা—তত্ব — তন, শশী — শশ, এইরাপে য ফলারও লোপ দৃষ্ট হর; যথা—ধ্যা — ধন, মধ্য — মধ। লএর স্থানে কথন কথন 'র' ব্যবহৃত হর, ঘণা—কমল — কমর, গলৈ — গরে, ইত্যাদি।

---)=(----

# স্রবোধ সম্বন্ধে কয়েকটি সম্বেত নিয়ে প্রদর্শিত হইল।

সঙ্কেত।	সংজ্ঞা। অর্থ।	উদাহরণ।
	একদণ্ড একমাত্রা যথা	के बा के इंड्रामि।
ı	··· দ্বিদণ্ড ··· দ্বিমাত্রা ··· "	म ब ब
н	·· ত্রিদণ্ড ··· ত্রিয়াত্রা ··· "	में या हा
	· অদ্বচন্দ্ৰ ··· অদ্বিমাত্ৰা ··· ,,	भँ चाँ नाँ
×	·· ডমরু ··· সিকিমাত্রা··· ,,	अं के के
ΘX	চন্দ্রাৰ্দ্ধভমরু বার আনা মাত্রা,	新難勞
Δ	··· ত্রিকোণ ··· কোষল ··· ,,	화 함 휴
r	পতাকা 😐 কড়ি ··· "	ৰ্ম
7	- নিম্নরেখা আশ "	南山南山岩
EE 499	্ নিল হিরেখা — মিড় — "	र्म के ज
· · · ·	· উদ্ধ-বন্ধনী · তুই বা ভতোধিক	স্থরের একমাত্রা

সংজ্ঞা। অর্থ।

छेमार्द्रण।

·· বিন্দু···উর্দ্ধে তারা সপ্তকস্থানীয় ,, গাঁ মাঁ নিম্নে উদরা সপ্তকস্থানীয় সা স্ব

সঞ্জাস্থান কুলাক্ষর প্রা পশ্চাতে অবস্থানাতুসারে প্রথম বা শেষ এক স্থরের সহিত তজ্জাতীয় স্থরের সামান্ত সংশ্ৰব যথা---

- নক্ষত্ৰ-প্ৰত্যাবৰ্ত্তনবোধক।

#### তাল সম্বন্ধে-

त्यांगिहरू ... मम... यथा हो छो

ফাঁক ,, দি ভা

১,২,ইত্যাদি অঙ্ক · · তাল · কৎ তেটে

**मृ**लांता

मा ला दा नि, मा साना मा ला दा नि

তারা

मी की की भी की की

#### স্বর-সাধন।

অবিরাহণ। অবরোহণ। मा दित का भा का धा नि मां, मां नि धा का भा का दित मां, নিম্নে যে কোন প্রণালীতে সর্গম্লেখা থাকুক্ না কেন, তাহা উপরোক্ত শিখার মত উচ্চারিত হইবে। ১নং--আরোহণ। অবরোহণ। 好南京与新日南苏, 苏南安南南南南 मं का ते अ श्वामिं, मं निष्ण भंत्र का अ ৩নং—আরোহণ। অবরোহণ। में बान गर्न विने, मैं निवन भेन बाम ৪নং--আরোহণ। में अ अंश ने न भे भ अंश ये व नि नि অবরোহণ।

৫নং--আরোহণ।

मं म म म श्रं श्र श्र श श श श श म म

नेनन न चंचचच निनिनि में में में

অবরোহণ।

भं भं भं भं नि नि नि नि चं च य य श्रंत्र न न न न म म म

नं न न न सं स स स म म म म

৬নং—আরোহণ।

मं म म बं बा ब ने न न भे म म म न न व व व व

निनिन मं मं मं

অবরোহণ।

मं में में निनि से य य से सस में म म म न न न

बाबा में म म

৭নং - আরোহণ।

भ नि ये नि ये ले ये ले

र्भ को को को को को घे की बी में जबरताहर।

भै वं भि ने वं भं ने भं चं ने भं ठनः—वादार्ग।

मंत्री में कार्तिभेष्ठी त्री भेष्ठी भेष्ठी कि क्री कि में अवरतास्य।

भै नियं ने नियं ने भी भी भी भी ने भ

১১मः----वारतांर्ग ।

भं से ते भं से ते भं से ते भं से ति भं से ति भं से ति भं वर्तारु।

भै नि ये ने भे नि ये ने भै ने च ने भे ने च ने भे ने चो भी >२२०१--- व्यादताहर। व्यवदताहर।

र्भ को सं र्ज कि भे भे , भे भे कि से से का र्श भे २०नः— बाद्राइग। व्यवद्राइग।

र्भ ध क्ष कि के भें भें ध कि क्षेत्र भें ১৫ कर — आदिवाई व ।

对都有都知知 都有 都 有 都 有 都 有 都 有



#### অবরোহণ।

১৬নং—আরোহণ।

文 甘 向 为 向 甘 向 为 , 为 向 甘 对 有 有 有 为 为 为 有 有 为 为 有 有 为 为 有 有 为 为 有 有 为 为 有 有 为 为 有 有 有 为 为 有 有 有 为 为 有 有 有 为 为 有 有 有 为 为 有 有 有 为 有 有 有 有 为 为 有 有 有 有 为 为 有 有 有 有 为

১৭নং--আরোহণ।

对相引力相引力 电引力相引力

#### অবরোহণ।

र्म सं ते में ते ते में ते से ते में ते ते से ति में, जा में ते ते ते ते ति में ते ति में, जावताहर।

में क्षेत्र भेने वे ने भेने भेने वे कि थे के भेने वे कि यरज्ञारून।

नी ये ले ये नी ये ले ये नियं, ये नियं ले ये ने य

२०नः---वाद्वाह्ग।

অবরোহণ।

२ > नः — चारत्राङ्ग ।

অবরোহণ।

भ की तं भ रुं वं नि भं, भं नि घं रुं भं तं की भे २२नः— वात्तारु। व्यवतारु।

मं च की मं नं च नं मं नं मं के मं की च मं

২৩নং—আরোহণ। অবরোহণ।

मं के के के के कि कि, मं, मं कि की ने के के के ২৪নং-- আরোহণ। অবরোহণ।

मं के में के ये कि में, में कि ये के में ने के में ২৫নং—আরোহণ। অবরোহণ।

र्म को की की की की भी, भी निर्देश की की की भी ২৬নং—আরোহণ।

如朝有本有首南外 如朝有与与自新 অবরোহণ।

并 節 望 郊 本 計 潮 并 并 節 智 知 本 市 ঠা হইতে ক্ৰমে ক্ৰত।

२१नः-- वाद्यार्ग। व्यवद्यार्ग।

अ बा न भ न व नि भं भ नि व न भ न बा भ छ।--

ঠা হইতে জমে দ্রুত। ২৮নং—আরোহণ।

সৰা ৰান গম মস সহ হানি নিসা আ— আ— আ— আ— আ— আ— ই—

উ---

9-

9-

অবরোহণ।

সঁনি নিষ ঘস সম মার রামা স্থান আ— আ— আ— আ— আ— আ— ই—

THE SECTION

5-

9-

19-

২৯নং—আরোহণ।

भंति ये ये ये ते ते ते वे ये कि ले के, जातरहारुग।

भैषेत्र नित्रेश घेशेत त्रीको श्रीको १००२:-- चार्ताइग।

भगने के ने व ने व नि भं नि भं,

অবরোহণ।

শ্ৰম নি ম'ন ঘ্ৰামা প্ৰামা ৩১নং—আরোহণ। অবরোহণ।

र्मन्नित्रं क्षेत्रक क्

भिनिष्ठा भ्रामिन मचात्राण्यानिम भंबनिष्ठा अभेनेकांमें मंन्यित्रान्याम *

ভিরব (সম্পূর্ণ) ৰী ধী দী,
কাওয়ালী, আস্বায়ী।

자 차 차 차 취 취 차 이 취 월 원 차 차 취 월 차 차 취 취 차 기 취 원 취 차 차 취 원 취 차 차 취 원 취 차 차 취 원 취 차

কণ্ঠসংশীতে উদাবার মধ্যম এবং তারার পঞ্চম পর্যান্ত হইলেই গীত
গাওয়া বাইতে পারে। কঠের নিয়তা এবং উচ্চতা বিশেষে থাদ এবং চড়া করিতে
পারা বায়।

অন্তরা।

ভৈরব, কাগুয়ালী। স্মী ঘানি ।

আস্থায়ী।

मं की की नं न मं नं में ने में ने की की भी

অন্তর ।

ভৈরবী, (সম্পূর্ণ) আ ন ম ন ন )
কাওয়ালী, আন্থায়ী।

#### অন্তরা।

安女母后母后为母后母子的母子的母后女子的母母子的女子。 安后为一句子的一句母子的一句母母 女女子和女母的女母后母子和母母

> তিন্তি (সম্পূর্ণ) স্বী রী রী নি মি, কাওয়ালী, আস্থায়ী।

#### অন্তরা।

বিভাষ খাড়ব, ম বিবাদি,
কাওয়ালী, আস্থায়ী।

में मि में को को को में के में भी भी भी भी

南岩湖甘甘南 甘蜡节节而甘苏南甘

অন্তরা।

न न न म म म भ बी म नि म नि म न न

## আলাহিয়া,(সম্পূর্ণ) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

২য় অন্তরা।

ने ने में बें ने में के में के में के में के में के

মধুমাধ্ সরঙ্গ, নি নিওড়ব। ।
গধ বিবাদি।—কাওয়ালি, আস্থাই।

অন্তর ।

## त्रन्गाविंग मात्रक, मन्भूर्ग।

ঝাঁপতাল, আস্থায়ী।

(+)

অন্তর ।

গৌড় সারজ, সম্পূর্ণ, স ম (৯) কাওয়ালী, আস্থাই

অন্তর ।

ভিমপল শ্রী, সম্পূর্ণ, গি দি
্১০)
কাওয়ালী, আস্থায়ী।

南面面 有其有量为

#### অহর।।

মূলতান, সম্পূর্ণ, ঋ নি ধী ম ম (১১)
কাওয়ালী, আস্থায়ী।

# পুরবী, সম্পূর্ণ, ^{ৰী র্ম স} ) (১২) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

#### অভ্যা

# পুরিয়া, খাড়ব, খ্রী র্ম, স্স বিবাদি, ) (১৩ কাওয়ালী, আস্থায়ী।

में नि में नि की नि में में नि की नि

মাল জী, ওড়ব, ম, স্বা ষ বিবাদি (১৪) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

#### অন্তরা।

> গ্ৰী, সম্পূৰ্ণ ৰী ৰী মি কাওয়ালী, আছায়ী।

为 向 为 都 | 中 報 報 为 向 为 智 向 点 为 向 为 例 都 为 简 为 都 都 为 |

#### অন্তরা।

## কল্যাণ, সম্পূর্ণ ম কাঁপতাল, আহায়ী।

भै नि सं नि सं नि सं ने सं ने सं ने से ने

অন্তর

南郊南郊外外面都外外 和南部部市南部市

ইমন সম্পূর্ণ, মি কাওয়ালী, আন্থায়ী।

नं नं सं मि सं मं में से नं भी नं भी नं भी नं भी नं

对新电电压电 新电压电流 电影电影电影

অন্তর

## ইয়ন, কল্যাণ, সম্পূর্ণ ^{ফা} ম আঁপতাল, আস্থায়ী।

#### অন্তর্গ ।

ভূপালী, ওড়ব, ম নি বিবাদি ) (১৯)
কাওয়ালী, আস্বায়ী।

में बाबारी ने ने बा में रे बा में में में

स्थ भ तं तं स्थ तं ते । वे तं त्रे त्रं संस्थ तं स्थ तं स्य स्थ तं स्य स्थ तं स्य तं स्थ तं

> কিদার, সম্পূর্ণ, ^ম ম কাওয়ালী, আহায়ী।

#### অন্তর ।

अ भ व ल में भ कि व कि व भ भ कि वा भ भ भ के भ में भ कि व कि व भ म के में भ भ के भ में भ के भ के कि व न भ के भ ल व कि भ व ले भ के भ के भ के भ के भ

> হাস্থির সম্পূর্ণ, ম র্ম কাওয়ালী, আস্থায়ী ৷

অন্তরা ।

对新河南电光湖湖 有有有有有

ছায়ানট, সম্পূর্ণ, নি নি । (২২) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

অন্তরা।

制 特 新 安 南 新 有 新 有 一

কানড়া, সম্পূর্ণ, গি মি নি নি (২৩)
কাওয়ালী, আহায়ী।

অন্তরা ।

मं निर्म । निर्म । मं सं सं भं । मं म निर्म ।

তিলক্ কামোদ, সম্পূর্ণ, নি নি কাওয়ালী, আছারী।

南村 南南山南省 中南南南山南南

অন্তরা।

南南南南部 新華 南部 南部 南部

সুরট, সম্পূর্ণ, নি নি (২৫) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

অন্তর |

和朝后对为南部 南部 新新新新新新

্ত্রাড়ানা, সম্পূর্ণ, গি ছী নি নি কাওয়ালী, আস্থায়ী।

অন্তরা।

সিস্তু, সম্পূর্ণ, রী নি কাওয়ালী, আস্থায়ী।

र्भ को भि भ को भ को भी को भी को भी को भी मं ले मि में मि ले में में ले की की की की में में कि का मं की मं मं की मं की मं की मं की मं की मं नि से भे ने भे में में ने में ने से ने में ने से

का मं निका में निका में निका में निका में निका निका श्रे भे श्रे मि अ रि मि श्रे भे श्रे भे शि की त्मघ. शांखत, स विवानि।

কাওয়ালী, আন্থায়ী।

অন্তর

বসন্ত খাড়ব, প বর্জিত শ্বী,২৯।
কাওরালী, আস্থারী।

# भं के 'भं से नि य' भ में 'भं के सी

মাল কৌশ, পুড়ব, স্থা সা বৰ্জিত, বি ঘী মি কাওয়ালী, আস্থায়ী।

भैनी 'म निमिन्न भिन्न भ

第一部本母母的 并后母本的特殊本母的一部

# সিন্দুড়া, সম্পূর্ণ, ^{নি} নি কাওয়ালী, আস্থায়ী।

অন্তরা।

হিতোল, ওড়ব, স্বা স বর্জিত ম কাওয়ালী, আস্থায়ী।

南南州南南州城县 南县 南县 省南 新南 安南

节电 节电 特. 第十 为

#### অন্তর ।

পারজ, সম্পূর্ণ, মি बी घे । (৩৩) কাওয়ালী, আস্থায়ী।

অন্তরা ।

中军有向一共制制 节向一节的一节与制

> বৈহাগ, কাওয়ালী। আস্থায়ী।

অন্তর ।

为 和 对 前 朝 为

(3)

## (মধ্যগতি) ভৈরব, চোতাল, সম্পূর্ণ, ( बी वी नी न ) আস্থায়ী।

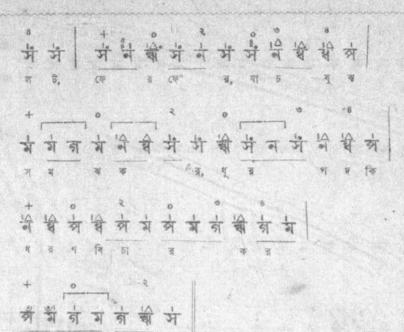
 मिन में त्र में मंत्र के में ते के की

 मिन में त्र में मंत्र के में ते की

 इ अ मा
 १ व के कि में ते की

## অন্তরা।

新華·新斯·葡萄·斯·葡萄·葡萄·葡萄·葡萄·葡萄·



সঞ্গরী।

CH #

নাগকেন্ত পরপারং ন জানাতি সরস্বতী।
অন্যাপি মজনতয়াং তৃত্বং বহতি বহুনি র

 अ
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क

 अ
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क

 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ
 अ

 के की को की को का को को को की की की

 के की को का को को को को की की

 क की का का का का का का

भे को भे भी भे भे की विवा



#### वाद्यांग ।

衛坊坊坊山坊坊 8 + 0 郑 郑 郑 和 郑 郑 र म किं भे भे भे न भें ने ही की গৈ চি, छ म स क्रि क्ला क त न क जि, छ ज म म म म म म म म म म म म म म म म म म ক হা গিনতীক রি য়ে; ম হা में नं भं भं नी ची में न में भं | भं দ তা ন ংব ए दर्श 为为日制分 । अं

व एक व एक आ इस म, म व स्थ

 अ
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क
 क</

(২) (বিলম্বিড) ভৈরব, চৌতাল।

আস্থায়ী।

मंबी मं मं मं मं मं भी भी भी

#### অন্তর।।

 मं
 के
 के

## সঞ্চারী।

### আভোগ।

(0)

## (মধ্যগতি) ভৈরব, ধামার।

### আস্থায়ী।

वा उन ला (ल व्या)+